चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से मन की बात	8
संपादकीय	9
संपादक के नाम पत्र	11
द्वादश ज्योतिर्लिंग	12
महाशिवरात्रि	15
व्रज संस्कृति और वृंदावन	17
श्री चैतन्यमहाप्रभु	18
स्वर्ण से बहुमूल्य सुकन्याओं....	19
होली : पारम्परिक त्यौहार	20
फरौली में होली	22
भदावर के होली लोकगीत	23
धमार	26
लला फिर खेलन अईयो लखनऊ में होरी	27
सिन्दरपुरिया होली व्यार....	29
मैनपुरी में होलीगायन	30
राधिका जी की सगाई	32
फाग उत्सव	33
गोत्र वरू की प्रशस्ति	36
शाखा समाचार	40
समाज समाचार	41
शोक समाचार	42

अंक 3
मार्च, वर्ष - 22

सभापति
डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
president@chaturvedimahasabha.in

सचिव
श्री मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी
मोबा. 098711-70559

कोषाध्यक्ष
श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 09868875645

संपादक सलाहकार मंडल
डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा
पूर्व संपादक

संपादक
शशांक चतुर्वेदी
पत्र व्यवहार का पता:
'चतुर्वेदी चंद्रिका', ई-8/जी2/255
गुलमोहर कॉलोनी, भोपाल
(मध्यप्रदेश)
मोबा. 9826086879
ई- मेल :
sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

वेबसाइट : www.chaturvedimahasabha.in

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
Account No. : 1006238340
IFSC Code : CBIN0283533
Branch : Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा आजीवन सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
महासभा सत्र + पत्रिका वार्षिक सदस्यता शुल्क-
101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक शशांक चतुर्वेदी

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

अपनों से मन की बात

● डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
Email : president@chaturvedimahasabha.in

बंधुवर पालागन,

यह फाल्गुन मास आनंद का मास है। इसमें गाए जाने वाले गीतों को फाग कहा जाता है। इन दिनों में दिन का समय भी बड़ा होने लगता है। टेसू के फूल, आम की बौर के रूप में प्रकृति भी अपनी छटा बिखरती नजर आती है।

फागुन का नाम आते ही मौज-मस्ती, उमंग-उत्साह, रंग-अबीर होली का चित्र मन मस्तिष्क में उभर आता है। फागुन, फाल्गुन का अपभ्रंश है। इन दिनों मौसम न अधिक गर्म होता है, न अधिक ठंडा। फाल्गुन मास यह सिखाता है कि जिस तरह पेड़ पौधे अपने जीर्ण - शीर्ण वस्त्रों को उतार फेंक कर, नई कोपलों के रूप में नए वस्त्र धारण करते हैं। उसी प्रकार हमें पुराने बुरे विचारों को त्याग नए व अच्छे विचारों को अपनाना चाहिए। फागुन में पढ़ने वाला होली का त्यौहार बुराइयों को खत्म करने व अपने सभी भेदभाव भूलकर एक होने का संदेश देता है।

इस माह में पड़ने वाले होली का त्यौहार हमारे आराध्य भगवान श्री कृष्ण के कारण ब्रज क्षेत्र व बराबर क्षेत्र में बहुत जोर शोर से मनाया जाता है। इसके अनेक रंग रूप प्रचलित हैं, जैसे फूलों की होली, गुलाल की होली, रंग की होली, लट्ठमार होली, फाग गायन जैसे अनेक रंग दिखाई देते हैं। इस अवसर पर लाखों लोग भगवान से भी होली खेलने मंदिरों में जाते हैं।

कृष्ण प्रेम के कारण चतुर्वेदी समाज में फाल्गुन में होली का त्यौहार बहुत हर्षोल्लास से मनाया जाता है। अनेक शहरों में होली मिलन कार्यक्रम व फाग गायन के कार्यक्रमों का आयोजन होता है। भदावर स्थित ग्रामों में हमारे बांधव अपने-अपने ग्रामों में बड़ी संख्या में एकत्र होते हैं। अलग-अलग ग्रामों में अलग-अलग दिन होली गायन के कार्यक्रम होते हैं। पूर्णिमा के दिन पुरा कन्हैरा, परिवा (धुलेड़ी) के दिन अपने अपने गांव में, दूज के दिन होलीपुरा व तीज के दिन तालगाँव में होली गायन के कार्यक्रम आयोजित होते हैं। सभी बांधव सभी कार्यक्रमों में एक-दूसरे के यहाँ बड़े उत्साह से भाग लेते हैं। चैती आठे के दिन कैमर बाबा पर बहुत बड़ा मेला भरता है। इसमें चंद्रपुर, कमतरी, कछपुरा व भदावर के अन्य गाँवों के बाँधव एकत्र होते हैं। इन दिनों बाबा बटेश्वर नाथ की छवि अनोखी होती है। भक्तगण उनके दर्शन कर आशीर्वाद व लाभ प्राप्त करते है। मैनपुरी में दो दिन खूब रंग चलता है। पहले दिन ठाकुर जी की सवारी निकलने के साथ रंग शुरू हो जाता है व दूसरे दिन ठाकुर जी के लौटने के साथ रंग बंद हो जाता। उसके बाद कोई रंग नही खेलता। फरौली में भी चेती आठें को खूब भव्य कार्यक्रम होता है। जहाँगीरपुर में भी होली के कार्यक्रम होने लगे है। इस फागोत्सव में शिवप्रिया विजिया का विशेष महत्व होता है।

विगत बैठक में गठित विवाह विच्छेद निराकरण समिति में भाई ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (फरौली/नागपुर) का नाम भी है, जो भूलवश रह गया था। फरवरी माह से चतुर्वेदी चंद्रिका का वितरण पूरे भारतवर्ष में पुनः प्रारंभ हो गया है। प्रथम बार महासभा द्वारा प्रकाशित कैलेंडर को आप सभी का बहुत स्नेह और आशीर्वाद प्राप्त हुआ। इसके लिए बहुत-बहुत आभार।

डॉ. शशि चतुर्वेदी (चंद्रपुर/इंदौर), अध्यक्ष इंदौर सभा के दुखद निधन पर मैं सम्पूर्ण समाज की ओर से सादर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

कोरेना का प्रकोप अभी थमा नहीं है इसलिए सतर्कता अभी भी आवश्यक है। आप स्वस्थ रहें व अपने परिवार को सुरक्षित व स्वस्थ रखें। होली व महाशिवरात्रि की शुभकामनाओं के साथ!!!!

विवाह विच्छेद निराकरण समिति

1) श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी, भोपाल (संयोजक) - 9425008744
2) श्रीमती बीना मिश्रा, हैदराबाद - 9391185766
3) श्रीमती विनीता चतुर्वेदी, देहरादून - 8954700002
4) श्रीमती अर्चना चतुर्वेदी, जयपुर - 9649883005
5) श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी, नागपुर - 9312242661
6) श्री भरत चतुर्वेदी, भोपाल - 9425010466

संपादकीय

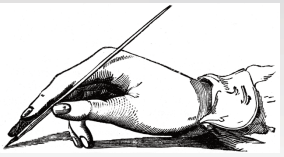

भस्म अंग सोहे, रुचि नीलकंठ मोहे,
मन हाथ में त्रिशूल राजे, शशांक ललाट पै।
गरे में भुजंग हार, जूरे बीच गंगाधर,
आसन लगाय बैठे, उनके शैलराट पै।
तीन नेत्र धारी, अविकारी, सुखकारी,
महाबैल की सवारी, बलिहारी ठाठबाट पै।
काशी के समान, आशुतोष भगवान प्रभु,
लाईकें बिराज हौ, बटेश्वर के घाट पै ।।

फागुन माह की कृष्ण त्रयोदशी की शिवरात्रि को महाशिवरात्रि कहते हैं। इस बार 11 मार्च को महाशिवरात्रि मनाई जाएगी। इस दिन को भक्तगण भगवान शिव और माता पार्वती के विवाह के दिन के रूप में भी मनाते हैं। भगवान शिव के भक्तों द्वारा यह पर्व बड़ी धूमधाम से देश भर में मनाया जाता है। पूजा-अर्चना, व्रत- उपवास द्वारा शिव जी की आराधना की जाती है। द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक बैजनाथ ज्योतिर्लिंग के दर्शन का आज के दिन विशेष महत्व है।

भोले बाबा का आशीर्वाद मिले आपको, उनके वरदान का प्रसाद मिले आपको।।
अपनी जिंदगी में खूब सुख व उन्नति हो, और हर किसी का प्यार मिले आपको ।।

वसंत ऋतु के एक और प्रमुख त्यौहार होली भी बड़े हर्ष उल्लास के साथ हमारे बांधव बड़े मनोयोग से बनाते हैं। अपने-अपने निवासित शहरों के अलावा अनेक बांधव अपने-अपने अपने मूल गांवों में इस अवसर पर बड़ी संख्या में एकत्र होते हैं। हर्ष उल्लास उत्साह उमंग मौज मस्ती रंग गुलाल से सराबोर वह पल महसूस करने प्रतिवर्ष बांधव दूर-दूर से यहाँ पहुंचते हैं। जिंदगी की भाग-दौड़, व्यस्तताओं, आपाधापी, भागमभाग से डोर सिर्फ मौज-मस्ती, आनंद-उमंग व उत्साह के आलम का रस दिनभर होता है। फाग गायन, रंग-गुलाल का अनोखा व अद्भुत रंगविरंगा सतरंगी माहौल होता है। इसमें ठंडाई व बिजिया का योग इन मस्ती के पलों के आनंद को चार चांद लगा देता है। इन पलों क्या आनंद को जो एक बार महसूस कर लेता है व उसका चश्मदीद हो जाता है वह बरबस ही हर साल बार-बार वहां पहुंचने लगता है। वह अपनों से मिलना, सुख-दुख के पलों को साझा करना, बेफिक्री का आलम, मौज मस्ती, चिंताओं से परे जीवन के अलग अलग रंगों से भरपूर एक अद्भुत मंजर होता है। जिसके लिए काफी पूर्व से तैयारियां होने लगती हैं, क्योंकि गांव में आयोजन हेतु बाहर से साधन, संसाधन एकत्र कर व्यवस्थाएं बनानी होती हैं।

इस अंक में महाशिवरात्रि के अवसर पर चित्रा जी (भोपाल) व विनीता जी (देहरादून) के लेख दिए जा रहे हैं। इस बार होली पर विशेष जोर देते हुए ज्यादा से ज्यादा सामग्री प्रकाशित करने का प्रयास किया है। इस अंक की साज सज्जा में भाई भरत जी (रिसड़ा), भाई लोकेन्द्र जी (साहिबाबाद), सुबोध जी (लखनऊ), दिलीप जी (लखनऊ), अंबर जी (भोपाल) अशोक जी (फरीदाबाद), सौरभ जी (लखनऊ), ममता जी (आगरा) का उल्लेखनीय सहयोग प्राप्त हुआ है। पूर्व सभापति आदरणीय भरत जी का भी विशेष स्नेह प्राप्त हुआ है। सभापति डॉ. प्रदीप जी, आदरणीय कुश जी, मंत्री मुनींद्र जी, बड़े भाई भरत जी जैसे मजबूत स्तंभों व मार्गदर्शकों के मार्गदर्शन से मुझ जैसे नावन्तुक का ज्ञानवर्धन हो रहा हैं व एक नया अनुभव प्राप्त हो रहा है। आप सभी का आभार।

पत्रिका को आर्थिक मजबूती प्रदान कर स्वावलंबी बनाने के लिए महासभा संरक्षक सतीश जी (नागपुर), दिलीप जी (जलगांव), दिलीप जी (लखनऊ), भुवनेश जी (गोंदिया), व आलोक जी (इलाहाबाद) का बहुत-बहुत आभार।

होली की मंगल कामनाएं।

सादर पालागन
(शशांक चतुर्वेदी)

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा महासभा कार्यकारिणी - 2020-2023

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

संरक्षक : डॉ. सतीश चतुर्वेदी (नागपुर), श्री भरत चंद्र चतुर्वेदी(भोपाल) (पूर्व सभापति), श्री राजेंद्रनाथ चतुर्वेदी "रज्जन" (कोलकाता) (पूर्व सभापति), श्री राजेंद्र आर. चतुर्वेदी, (मुम्बई) (पूर्व सभापति), श्री त्रिभुवन चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री कमलेश पाण्डे (नोएडा) (पूर्व सभापति), ले. ज. विष्णुकांत चतुर्वेदी (नोएडा), श्री मदन चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री बालकृष्ण चतुर्वेदी (नोएडा)

सभापति : डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी (दिल्ली)

उप सभापति : श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी,(भोपाल), श्री कैलाश चतुर्वेदी (कासगंज), श्री अखिलेश चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री मनोज चतुर्वेदी (बैंगलोर)
मंत्री : श्री मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी (नोएडा)
संयुक्त मंत्री : श्री भरत चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री आशुतोष चतुर्वेदी (कानपुर), श्री अंशुमान चतुर्वेदी (जयपुर)
कोषाध्यक्ष : श्री महेश चतुर्वेदी (दिल्ली)

संपादक,चतुर्वेदी चंद्रिका, श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल) **ऑडिटर - शिव एसोसिएट,** नई दिल्ली

माननीय कार्यकारिणी सदस्य : श्री नीरज चतुर्वेदी (हिंडौन), श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (नागपुर), डॉ. कुश चतुर्वेदी (इटावा), श्री शशांक चतुर्वेदी (भोपाल), श्री मनीष चतुर्वेदी (हरदोई), डा. राकेश चतुर्वेदी (मथुरा), श्री विनोद चतुर्वेदी (मुम्बई), डा. राजीव चतुर्वेदी (पुणे), श्री पंकज चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री सुशील पाठक (मुम्बई), डॉ. ऋषभ चतुर्वेदी (देहरादून), श्रीमती बीना मिश्रा (हैदराबाद), श्री राकेश चतुर्वेदी(बरेली), श्री करुणेश चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री अजय चौबे(भोपाल), श्री प्रदीप चतुर्वेदी "लालन" (आगरा), श्री भुवनेश कुमार चौबे(गोंदिया), श्री आलोक चतुर्वेदी (प्रयागराज), श्री पुनीत चतुर्वेदी (आगरा), श्री प्रदीप चतुर्वेदी (ग़ाज़ियाबाद), श्री ललित चतुर्वेदी (कोटा), श्री राहुल चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री विशाल चतुर्वेदी (पुरा), श्री गोविंद चतुर्वेदी (जयपुर), श्री गोविंद चतुर्वेदी (इंदौर), श्री ललित चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री अभयराज चतुर्वेदी (गुरुग्राम), श्री विनय चतुर्वेदी (अहमदाबाद), श्री अभिषेक चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री प्रवेश चतुर्वेदी (कानपुर) श्री नीलकमल चतुर्वेदी (कोलकाता), श्री हेमंत चतुर्वेदी (नासिक), श्री अनिल चतुर्वेदी (प्रयागराज), श्री सुदीप चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री सुशील चतुर्वेदी (फ़रीदाबाद)।

स्थाई आमंत्रित सदस्य : श्री अविनाश चतुर्वेदी (कानपुर), श्री पदम कुमार चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री प्रताप चंद्र चतुर्वेदी (लोनी), श्री सुधीर चतुर्वेदी (नोएडा), श्री सुभाष चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री राजेन्द्र प्रसाद चतुर्वेदी "अन्नी" (प्रयागराज), श्री मनमोहन चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री बिपिन पांडेय (गाजियाबाद), श्री विपिन चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री शिव नारायण चतुर्वेदी (कोटा), श्री कमलेश रावत (कोटा), श्री लोकेंद्र नाथ चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री राहुल चतुर्वेदी (मुम्बई), श्री प्रवीण चतुर्वेदी (हैदराबाद), श्री ईश्वर नाथ चतुर्वेदी (कोलकात्ता), श्री अरुण चतुर्वेदी (जयपुर), श्री अमित चतुर्वेदी (मथुरा), श्री योगेंद्र चतुर्वेदी (ग्वालियर)।

विशेष आमंत्रित सदस्य : श्री नीरज चतुर्वेदी (मैनपुरी), श्री गजेंद्र चौबे (दमोह), श्री दिनकर राव चतुर्वेदी (फरौली), श्री कौशल चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री मधुकर पाठक (आगरा), श्री चैतन्य किशोर चतुर्वेदी (फर्रूखाबाद), श्री संजय मिश्रा (कानपुर), श्री अम्बर पाण्डे (भोपाल), श्री अरुण चतुर्वेदी (नागपुर), श्री मुकेश चतुर्वेदी (रिषड़ा), श्री भारत भूषण चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री शशिकांत चतुर्वेदी (आगरा), श्री अरविंद चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री महेंद्र चतुर्वेदी (जयपुर), श्री दिलीप चतुर्वेदी (फिरोजाबाद), श्री लेखेंद्र चतुर्वेदी "पुत्तन" (लखनऊ), श्री शशांक गिरीश चौबे (नागपुर), श्री संजय चतुर्वेदी (अहमदाबाद), श्री बसंत रमेश चौबे (भिलाई), श्री नितिन चतुर्वेदी (निम्बाहेड़ा), श्री राजेश चतुर्वेदी, "गुड्डू" (कोलकत्ता), श्री हर्ष मोहन चतुर्वेदी, "मोहित" (आगरा), श्री भूपेंद्र चतुर्वेदी (आगरा), श्री दिनेश चतुर्वेदी (बाह), मनीष चतुर्वेदी (दिल्ली)।

महिला प्रकोष्ठ : श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी (भोपाल) (संयोजक), श्रीमती नीलिमा चतुर्वेदी (कानपुर), श्रीमती विनीता चतुर्वेदी (देहरादून), श्रीमती समता चतुर्वेदी (दौसा), श्रीमती पूनम चतुर्वेदी (लखनऊ), श्रीमती संध्या चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्रीमती अर्चना चतुर्वेदी (जयपुर), श्रीमती दीपाली चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्रीमती रश्मि चतुर्वेदी (नोयडा)।

युवा प्रकोष्ठ : डॉ. मनीष चतुर्वेदी (कोटा), (संयोजक), श्री सुधांशु चतुर्वेदी (दिल्ली), श्री रीगल चतुर्वेदी (भिंड), श्री दिवस चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री आशीष चतुर्वेदी (आगरा), श्री आशीष चतुर्वेदी (हावड़ा), श्री दुर्गेश चतुर्वेदी (जयपुर) श्री गगन चतुर्वेदी (पुरा), श्री पुलकित चतुर्वेदी (नोएडा)।

चिकित्सा प्रकोष्ठ : डॉ. संजय चतुर्वेदी (आगरा), डॉ. अरविंद चतुर्वेदी (दिल्ली), डॉ. निखिल चतुर्वेदी (आगरा)

आई टी प्रकोष्ठ : श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद), श्री प्रसून चतुर्वेदी (भुवनेश्वर)।

पता : 405-406, चिरंजीव टावर, नेहरू प्लेस, नई दिल्ली - 110049

संपादक के नाम पत्र

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा द्वारा

शताब्दी वर्ष पर प्रकाशित १०० वर्षों का इतिहास समेटे श्री महाविद्या देवी व श्री चर्चिका देवी के चित्रों के साथ ही श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के संस्थापक महापुरुषों के चित्रों सहित बहुउपयोगी कलैंडर में अपने श्रद्धेय पिताश्री स्वनामधन्य पंडित गिरधर शर्मा चतुर्वेदी के चित्र प्रकाशन पर महासभा के इस कार्य की भूरी भूरी प्रशंसा करते हुए

भावुक व गौरवान्वित होते हुए

महामहोपाध्याय जी के आत्मज

– प्रोफेसर शिवदत्त शर्मा चतुर्वेदी, जयपुर

बंधुवर पालागन, महासभा के अनूठे प्रयास के रूप में शताब्दी वर्ष को समर्पित संस्थापक सदस्यों की फोटो से सुसज्जित कैलेंडर व कामधेनु गुल्लक प्राप्त हुई। महासभा के संस्थापक सदस्यों के बारे में जानकर व उनकी शानदार फोटो देखकर सुखद आश्चर्य हुआ जिससे यह जानकारी मिली कि इस गौरवशाली समाज की महासभा के रचयिता व कर्ताधर्ता कौन थे ? फोटो देखकर बनाने वाले की मेहनत हेतु साधुवाद व साथ ही साथ सज्जा ने मन मोह लिया। मेरे बाबा स्वर्गीय श्री अयोध्या नाथ पाठक, आगरा के चित्र को देख हुए भावुक व गौरवान्वित पलों के बीच मैं महासभा का अपने अग्रजों को स्मरण करने के अनूठे प्रयास के लिए आभार व्यक्त करता हूं।

उक्त संदर्भ में वर्तमान अध्यक्ष डॉ. प्रदीप जी के बधाई के पात्र हैं, जो अपने विचारों एवं अपनी कार्य प्रणाली के माध्यम से समाज की संरचना को नवीन युग में विभिन्न माध्यमों से प्रस्तुत करते हुए अनवरत अवगत कराने में लगे हैं। साथ ही चंद्रिका को नित नए कलेवर में प्रस्तुत करने के लिए टीम चंद्रिका को बधाई।

– **प्रदीप चन्द्र पाठक,**
मधुकर पाठक, आशुतोष पाठक (आगरा)

सम्पादक जी, पालागन।

टूटे हुए तारों से फूटे वासंती स्वर, पत्थर की छाती में आया नव अंकुर।

नये सम्पादक के आने से चंद्रिका में वासंती व्यार की महक आने लगी है, अब आपके प्रयासों से सामाजिक चेतना पर पड़े पत्थर में अंकुर अवश्य निकलेंगे, ऐसा विश्वास है। समाज ने कैलेंडर एवं गुल्लक योजना का स्वागत करते हुए सहयोग दिया है। अध्यक्ष जी ने अन्नपूर्णा योजना में वृद्धि स्वागत योग्य है। स्मारिका समिति, अलंकरण आकलन समिति, विवाह विच्छेद निराकरण समिति का गठन अच्छा प्रयास है, लेकिन समितियां समयबद्ध तरीके से काम करें, इसका ध्यान रखना होगा।

डिजिटल मीटिंग एवं उसकी रिपोर्ट की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ

– **दिलीप सिकंदरपुरिया,** लखनऊ

--

संपादक जी,

कमल मामा जी पर श्रद्धांजलि लेख पढ़कर हम सब की आंखें गीली हो गई। लेकिन इसके बाद मैंने पहली बार पूरी पत्रिका पढ़ी। डा. बीना जी का यात्रा, उषा जी का रसोई का चीता, वास्तविक अनुभव विचित्र किन्तु सत्य एवं साँस फूलने का आयुर्वेदिक उपचार जैसे लेख जानकारी पूर्ण हैं। अन्य सामग्री भी पठनीय है। अगले अंक की प्रतीक्षा में..

– **अनीता रमण,** (होलीपुरा/ कोलकाता)

आज अभी माह फरवरी की चंद्रिका डिजिटल प्रारूप में प्राप्त हुई।

सभापति भाई डॉ प्रदीप जी की कलम से बसंत ऋतु का आभास हुआ पर यहाँ देहरादून में तो ठिठुरती ठंड ठिठुरा रही है, मंसूरी तथा साथ की पहाड़ियों में बर्फबारी के माहौल उत्पन्न हो रहा है। भाई शशांक के हृदय का कवि एकदम से जागृत हो गया।

संपादकीय तरन्नुम में लयबद्ध हो रखा है। सुंदर लेखन। इस बार पत्रिका में त्रिलोकी नाथ जी ने अपनी परंपराओं के वैज्ञानिक आधार स्पष्ट किये है। बहुत ही ज्ञानवर्धक हैं।

अन्य लेख भी आकर्षक हैं।

– **डॉ. ऋषभ चतुर्वेदी,** देहरादून

पत्रिका न मिलने की शिकायत निवारण के लिए आपने पहल की है वह बहुत प्रसंशनीय है। ईश्वर आपको इस कार्य मे सफलता दे। यही कामना करता हूँ। हमारा शत प्रतिशत सहयोग मिलेगा। जब भी आवश्यकता हो ।

–**हरेश मिश्रा,** मैनपुरी

--

द्वादश ज्योतिर्लिंग

- चित्रा चतुर्वेदी, बीमाकुंज, भोपाल

सौराष्ट्रे सोमनाथं च
श्री शैल मल्लिकार्जुनम,
उज्जयिनिया महाकाल ॐकारम ममलेश्वर ।
परल्यां बैजनाथ च
डाकिन्याम भीमशंकरम,
सेतुबन्धे तू रामेशं नागेशं
दारुकावने।
वारणस्यां तू विश्वेशं त्रयम्बकं गौतमी तटए,
हिमालये तू केदारं गृहशनेश च शिवालये।
एतानि ज्योतिर्लिंगानि, सायं प्रातः पठेन्नरः ,
सप्तजन्म कृतं पापं, स्मरेंन विनश्यति ।
इति द्वादश ज्योतिर्लिंगम स्तुति सम्पूर्णम।

भगवान भोलेनाथ के इन 12 नामों के स्मरण मात्र करने से ही दुर्भाग्य तुरंत समाप्त हो जाता है और सुख सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

ज्योतिर्लिंग उत्पत्ति के सम्बन्ध में अनेकों मान्यताएं प्रचलित हैं। विक्रम सम्वत के कुछ सहस्त्राब्दि पूर्व उल्कापात का अधिक प्रकोप हुआ। आदिमानव को रूद्र का यह आविर्भाव दिखा। शिवपुराण के अनुसार उस समय आकाश से ज्योति पिंड पृथ्वी पर गिरे और उनसे थोड़ी देर के लिए प्रकाश फ़ैल गया। यही उल्कापिंड 12 ज्योतिर्लिंग कहलाये।

कहा जाता है की यदि कोई शिव भक्त इन 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी एक स्थान पर भी जा कर ॐ नमः शिवाय या महामृत्युंजय का जाप करता है तो भगवान भोले भंडारी उसकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं और पापों का नाश कर देते हैं।

ऐसा व्यक्ति सुख से जीवन जीता है और मरणोपरांत स्वर्ग प्राप्त कर शिवगणों में से एक हो जाता है। ज्योतिष के अनुसार यदि हम 12 ज्योतिर्लिंगों में से अपनी राशि के आधार पर पूजा करते हैं तो जल्द ही अधिक पुण्य की प्राप्ति होती है। इसके लिए आवश्यक नहीं की आप अपनी राशि से सम्बंधित शिव मंदिर में ही जाएँ। आप किसी भी शिव मंदिर में जाकर अपनी राशि से सम्बंधित ज्योतिर्लिंग का स्मरण कर उनकी पूजा करें। आपकी पूजा निश्चित ही स्वीकार होगी और आप शिव कृपा के पात्र होंगे।

यह तो बात हुई राशियों के हिसाब से पूजा पाठ की,परन्तु प्रत्येक राशि के अनुसार ज्योतिर्लिंग की जानकारी रखना भी आवश्यक है। भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंग देश के विभिन्न

भागों में स्थित हैं। इन्हें द्वादश ज्योतिर्लिंग के नाम से जाना जाता है और इनके दर्शन मात्र से मनुष्य के जन्म जन्मांतर के पाप नष्ट हो जाते हैं। भक्त इस तरह से बाबा के आशीर्वाद की छाया में रहता है। आइये अब हम इन 12 ज्योतिर्लिंग के सम्बन्ध में जानकारी लेते हुए इनके कर्मवाच्य दर्शन करते हैं।

1. श्री सोमनाथ ज्योतिर्लिंग

गुजरात प्रान्त के काठियावाड़ क्षेत्र के अंतर्गत प्रभास स्थान पर विराजमान हैं। इस ज्योतिर्लिंग को भारत का ही नहीं अपितु समूचे विश्व का प्रथम ज्योतिर्लिंग माना जाता है। शिवपुराण के अनुसार जब चन्द्रमा को दक्षप्रजापति ने क्षय रोग होने का श्राप दिया था, तब चन्द्रमा ने इसी स्थान पर तप कर श्राप से मुक्ति पायी थी। ऐसा भी कहते हैं की यहाँ शिवलिंग की स्थापना स्वयं चंद्रदेव ने की थी। विदेशी आक्रमणों के कारण यह 17 बार नष्ट हो सकता है। हर बार यह बनता रहा और बिगड़ता रहा। सावन सोमवार और अन्य पूजा पाठ वाले दिनों में मेष राशि में जन्मे लोगों को इनका पूजन अर्चन करना चाहिए। मेष राशि वालों के जाप के लिए मंत्र ह्रीं ॐ नमः शिवाय ह्रीं है।

2. मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग

यह ज्योतिर्लिंग आंध्रा प्रदेश के कृष्णा नदी के तट पर श्री शैलम नाम के पर्वत पर स्थित है। इस मंदिर का महत्व भगवान शिव के कैलाश पर्वत के समान माना गया है। अनेक धार्मिक शास्त्र इसके धार्मिक और पौराणिक महत्व की व्याख्या करते हैं। ऐसी मान्यता है कि इस ज्योतिर्लिंग के दर्शन पूजन से सभी पापों का नाश हो जाता है और अश्वमेध यज्ञ की तरह पुण्य फल प्राप्त होता है। भगवान मल्लिकार्जुन वृष राशि के स्वामी हैं। इस राशि के जातकों को इनकी पूजा पाठ के साथ ॐ नमः शिवाय का मंत्र जाप करना अति लाभकारी होता है।

3. महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग

यह परमपवित्र ज्योतिर्लिंग मध्य प्रदेश के उज्जैन नगर में स्थित है। पुण्य सलिला क्षिप्रा नदी के तट पर स्थित उज्जैन प्राचीन काल में उज्जयिनी के नाम से विख्यात था। इसे अवंतिका पुरी भी कहते थे। यह भारत की परमपवित्र सप्तपुरियों में से एक है। महाभारत,शिवपुराण एवं स्कंदपुराण आदि में इसका वर्णन बहुत भव्य रूप में किया गया है। यह एकमात्र ज्योतिर्लिंग है जो दक्षिणमुखी है।नयहाँ प्रतिदिन सुबह होने वाली भस्मारती विश्व भर में प्रसिद्ध है। यहाँ की पूजा विशेषकर आयु वृद्धि एवं आयु पर आये हुए संकट को टालने के लिए होती है। इन्हें विशेषकर मिथुन राशि वालों का स्वामी माना जाता है। ॐ नमः भगवते रुद्राये का मंत्र जाप इस राशि वालों के लिए विशेषकर लाभकारी माना जाता है।

4. औंकारेश्वर ज्योतिर्लिंग

यह पवित्र ज्योतिर्लिंग मध्य प्रदेश के प्रसिद्ध शहर इंदौर के समीप स्थित है। यहाँ पहाड़ियों के चारों ओर नदी बहने से ॐ का आकार बनता है। ॐ के इस आकार लिए होने के कारण इसे औंकारेश्वर के नाम से जाना जाता है। कर्क राशि वाले जातकों के लिए इस ज्योतिर्लिंग की पूजा उपयोगी मानी गयी है। इन जातकों के लिए पूजा अर्चना के साथ ॐ ह्रौं जूं सः का जाप विशेष फलदायी होता है।

5. केदारनाथ ज्योतिर्लिंग

यह मंदिर भारत के उत्तराखंड राज्य के रुद्रप्रयाग में स्थित है। केदारनाथ मंदिर 12 ज्योतिर्लिंगों में शामिल होने के अलावा चार धाम और पंच केदार का भी भाग है। यहाँ की जलवायु प्रतिकूल होने के कारण यह मंदिर अप्रैल माह से नवंबर माह के बीच जी दर्शन हेतु खुलता है। कत्यूरी शैली से बने इस मंदिर के सम्बन्ध में कहा जाता है कि इसका निर्माण पाण्डव वंश के जन्मेजय ने कराया था। ज्योतिशास्त्र के अनुसार कुम्भ राशि के स्वामी बाबा केदारनाथ हैं। इस राशि के जातकों को या जिन लोगों को क्रोध बहुत अधिक आता है, उन लोगों को बाबा केदारनाथ का पूजन अवश्य करना चाहिए। मंत्रजाप अपनी इच्छानुसार किया जा सकता है।

6. भीमशंकर ज्योतिर्लिंग

यह ज्योतिर्लिंग महाराष्ट्र के पुणे से 110 किलोमीटर दूर सहाद्रि पर्वत पर स्थित है। इस मंदिर में स्थित शिवलिंग को भगवान के रूप में पूजा जाता है। इस मंदिर को ₹मोटेश्वर महादेव₹ के नाम से भी जाना जाता है। इस मंदिर के पास ही भीमा नदी बहती है जो कृष्णा नदी में मिल जाती है। ऐसी मान्यता है की जो श्रद्धालु सूर्योदय के बाद इनका दर्शन करता है उसे मोक्ष प्राप्त होता है। इस ज्योतिर्लिंग को कन्या राशि से सम्बंधित माना जाता है। इनके पूजन,अर्चन और वंदन के साथ ₹ॐ नमः भगवते रुद्राय ₹मंत्र का जाप अति फलदायी माना जाता है।

7. काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग

कहते हैं कि काशी तीनों लोकों से प्यारी नगरी है। जो भगवान शिव के त्रिशूल पर विराजती है। यह ज्योतिर्लिंग उत्तर प्रदेश के वारणासी जनपद की काशी नगरी में स्थित है। इसे आनंद वन, आनंद कानन, काशी, बनारस आदि कई नामों से जाना जाता है। सन 1780 में महारानी अहिल्या बाई होल्कर

द्वारा निर्मित यह ज्योतिर्लिंग हिन्दुओं के लिए एक प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है।

मान्यता है की प्रलय आने पर भी यह मंदिर डूबेगा नहीं ,भगवान भोलेनाथ इसे अपने त्रिशूल पर उठाये रखेंगे और प्रलय उतरने के बाद इसे वापस रख देंगे। कहते हैं धनु राशि वालों का सम्बन्ध काशी विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग से है। पूजन,वंदन और अर्चन के साथ ॐ तत्पुरुषाय विदमहे, महादेवाय धीमहि, तन्नो रुद्रे प्रचोदयात का मंत्र जाप इन जातकों के लिए फलदायी सिद्ध होता है।

8. त्रयंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग

इस ज्योतिर्लिंग को त्रयम्बकं के नाम से भी जाना जाता है। यह मंदिर ब्रह्मगिरि के पास गोदावरी नदी के पास स्थित है। इसे त्रयम्बक ज्योतिर्लिंग या त्रयंबकेश्वर शिव मंदिर भी कहते हैं।यहाँ ब्रह्मगिरि पर्वत से गोदावरी नदी निकलती है जिसका अपना आध्यात्मिक महत्त्व है। इस नदी को गोमती गंगा के नाम से भी जाना जाता है। यहाँ प्रत्येक 12 वर्ष पर महाकुम्भ पर्व का स्नान, मेला आदि धार्मिक कृत्यों का समारोह होता है। कुम्भ वाले दिनों में गोदावरी–गंगा में स्नान का अत्यधिक महत्व बताया गया है। एक मान्यता के अनुसार भगवान शिव को गौतम ऋषि और गोदावरी नदी के आग्रह पर यहाँ रहना पड़ा। मकर राशि वालों त्रयंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग की पूजा करना उपयोगी माना जाता है, जातक मंत्र जाप अपने अनुसार कर सकते हैं।

9. बैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग

यह झारखण्ड प्रदेश के संथाल परगना में जसीडीह रेलवे स्टेशन के समीप है। पुराणों में इस स्थान को चिताभूमि भी कहते हैं। इसे देवघर/बैजनाथ धाम भी कहा जाता है। सावन मास में देश भर से कावड़िये यहाँ कावड़ लेकर जल चढाने आते हैं। विदेशी पर्यटकों को भी यहाँ भोलेनाथ के नाम का जयकार लगाते देख सुखद अनुभूति होती है। सिंह राशि के जातकों के स्वामी बाबा बैजनाथ माने जाते हैं। इनकी पूजा भांग,धतूरा, बेल पत्र आदि से करना एवं महा मृत्युंजय मंत्र का जाप करना अति लाभकारी माना जाता है।

10. नागेश्वर ज्योतिर्लिंग

यह ज्योतिर्लिंग गुजरात प्रदेश के द्वारका क्षेत्र में स्थित है। धर्म शास्त्रों में शिव जी को सर्पों का देवता माना गया है। नागेश्वर का अर्थ नागों का ईश्वर है। इनकी महिमा में कहा गया है कि जो व्यक्ति पूर्ण श्रद्धा भक्ति से यहाँ दर्शन पूजन करने आता है। उसकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। वृश्चिक राशि वालों के लिए इस ज्योतिर्लिंग का पूजन अर्चन करना उत्तम माना गया है। इन जातकों को ह्रीं ॐ नमः शिवाय ह्रीं का जाप करना अत्यंत लाभदायी माना गया है।

11. रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग

इस ज्योतिर्लिंग की स्थापना मर्यादा पुरषोत्तम श्री रामचंद्र जी ने की थी। स्कन्द पुराण में इसकी महिमा का विस्तार में वर्णन किया गया है। इस विषय में एक कथा कही जाती है। जब श्री राम लंका पर चढ़ाई करने जा रहे थे। तब इसी स्थान पर समुद्र की बालू से शिवलिंग बना कर उसका पूजन किया था। रामेश्वरम सनातन धर्म के चार धामों में से एक है। रामेश्वरम का गलियारा सबसे लम्बे गलयारों में से एक है। यहीं स्थापित है अग्नि तीर्थम माना जाता है कि यहाँ स्नान करने से सारे रोग दूर हो जाते हैं। साथ ही सारे पापों का भी नाश हो जाता है। इस तीर्थ के चमत्कारी जल का रहस्य विज्ञान भी नहीं समझ पाया है। इस तीर्थ को सेतबंधु रामेश्वरम के नाम से भी जाना जाता है।रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग तुला राशि के जातकों स्वामी है। इनकी पूजा आंख के फूल, दूध, बताशा से की जाती है और यहाँ मंत्र ओम नमः शिवाय का जाप करना फलकारी होता है।

12. घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग

यह मंदिर हिन्दुओं का प्रमुख तीर्थ स्थल है। यह महाराष्ट्र में औरंगाबाद के समीप दौलताबाद से 11 किलोमीटर दूर वेरुलगाँव में है। इस मंदिर को घुश्मेश्वर, घ्रश्नेश्वर आदि नामों से भी जाना जाता है। इस ज्योतिर्लिंग को 12वा एवं अंतिम ज्योतिर्लिंग माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि भोलेनाथ की परम भक्त घुश्मा की प्रार्थना एवं आग्रह पर भोलेनाथ ने उसे यहाँ रहने का वरदान दे दिया और सदैव के लिए यहाँ वास करने लगे। इसके समीप ही एक सरोवर है जो शिवालय के नाम से विख्यात है और इसके वर्णन मात्र से ही भक्तजनों की मनोकामनायें पूर्ण होती हैं। मीन राशि वालों का इन्हें (घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग को) स्वामी माना जाता है। इनके पूजन अर्चन के साथ ॐ तत्पुरुषाय विदमहे महादेवाय धीमहि, तन्नो रूद्र प्रचोदयात ₹मंत्र का जाप विशेष फलदायी माना जाता है।

प्रत्येक भक्त की मनोकामना होती है की वह इन सभी ज्योतिर्लिंगों में जाकर पूजा अर्चना करे परन्तु सबके साथ ये संभव नहीं हो पाता। इन परिस्थितियों को देखते हुए आजकल कई मंदिरों में द्वादश ज्योतिर्लिंगों के प्रतिरूप की स्थापना कर उनके पूजन की व्यवस्था की गयी है। माना जाता है की पूजा में श्रद्धा का भाव मुख्य होता है ,यह पूजा हम कहीं से भी भी भगवान का स्मरण कर कर सकते हैं,यकीं मानिये आपकी पूजा निश्चित ही स्वीकार होगी.

जय भोलेनाथ । ॐ नमः शिवाय।

महाशिवरात्रि

- विनीता चतुर्वेदी, देहरादून

हम हिन्दुओं में भगवान शिव का स्थान सर्वोच्च हैं। महाशिवरात्रि का पर्व भगवान शिव के शक्ति से पार्वती के रूप में जन्म लेने के बाद उनसे पुनर्मिलन का पर्व है। श्री रामचरितमानस के बालकाण्ड में प्रसंग है कि : एक बार भगवान शिव अपनी पत्नि शक्ति के साथ मुनि अगस्त के आश्रम से राम कथा सुन कर वापस लौट रहे थे। जंगल में उन्हें मानव रूप में राम दिखाई दिये जो जंगल में सीता को खोज रहे थे। भगवान शिव ने उन्हें श्रद्धापूर्वक नमन किया तो शक्ति ने आश्चर्य जनक हो कर उत्सुकतावश उनसे प्रश्न किया कि आप कैसे एक साधारण मनुष्य को नमन कर रहे हैं? शिव ने उन्हें बताया कि ये राम हैं, भगवान विष्णु के अवतार। पर शक्ति उनकी बात से संतुष्ट नही हुईं। तो शिव ने शक्ति से कहा आप स्वयं संतुष्टि कर लीजिये। भगवान शिव वहीं विश्राम करने लगे और मां शक्ति श्री राम की परीक्षा लेने हेतु आगे बढ़ गईं। शक्ति स्वयं सीता का रूप धारण कर भगवान राम के सम्मुख प्रकट हुईं। परन्तु राम ने तुरन्त उन्हें पहचानते हुये पूछा कि देवी आप अकेले यहाँ जंगल में क्या कर रही हैं? शिव कहाँ हैं ? यह सुन कर सती एकदम से सकते में आ गईं और उनको शिव की बात की सत्यता का आभास हुआ। शक्ति शिव के पास बापस तो आ गईं। पर भय के कारण पूरी बात भगवान शिव को नहीं बताई। केवल कहा कि आप ठीक ही कह रहे थे। भगवान शिव ने ध्यान लगा कर पूरा प्रकरण ज्ञात कर लिया और जान गये कि सती माँ सीता का रूप धारण कर के राम के पास गईं थी।

परन्तु इस प्रकरण से एक अप्रिय स्थिति उत्पन्न हो गई। शिव के लिये सीता माँ का रूप थीं। अतः अब शिव के लिये सती के साथ सामाजिक संबन्ध का स्तर बदल गया और शिव ने स्वयं को सती के साथ पत्नि सम्बन्ध से विमुख कर लिया। सती भी शिव के साथ उत्पन्न इस सम्बन्ध परिवर्तन से विचलित रहने लगी। पर उन्होंने शिव के धाम कैलाश पर्वत को नहीं छोड़ा।

एक दिन सती ने देखा कि कुछ देवतागण आकाश मार्ग से

कहीं जा रहे हैं। सती ने भगवान शिव से इस सम्बन्ध में पूछा तो उन्होंने बताया कि आपके पितादक्ष ने एक यज्ञ का आयोजन किया। चूंकि बृह्मा के दरबार कभी दक्ष और शिव में किसी बात पर मनमुटाव हो गया था। उसके चलते दक्ष ने शिव और सती को इस यज्ञ में आमंत्रण नहीं भेजा। सती को अपने पिता की यह बात अच्छी नहीं लगी और वे बिना निमंत्रण के भी यज्ञ में जाने का मन बनाने लगीं। भगवान शिव के समझाने के विपरीत, कि विवाह हो जाने पर लड़की अपने पति की हो जाती है। अतः विवाहिता को बिना बुलाये पिता के घर भी नहीं जाना चाहिये। फिर भी सती की जिद पर शिव ने पीहर जाने की अनुमति दे दी। उनके साथ अपना एक गण वीरभद्र भी भेज दिया। पिता ने बिना बुलाये आई अपनी ही बेटी को उचित सम्मान नहीं दिया। सती उस यज्ञ कुण्ड की ओर गईं जहां सभी देवता और ऋषियों बैठे थे और धू धू करती अग्नि में अहुतियाँ डाली जा रही थीं। देवी सती ने वहाँ सभी देवताओं के भाग रखे देखे पर शिव का भाग वहाँ नहीं था। सती को पिता के इस व्यवहार पर अत्याधिक वेदना हुई। अपने इस अपमान से व्यथित सती ने यज्ञ कुण्ड़ में कूद कर स्वयं को भस्म कर डाला। यज्ञमंडप में खलबली मच गई। देवता और ऋषि मुनि भाग खड़े हुये। वीरभद्र ने क्रोध में आ कर दक्ष का मस्तक धड़ से काट कर अलग कर दिया।

सती द्वारा स्वयं को भस्म कर डालने का समाचार पा कर भगवान शिव के क्रोध की सीमा न रही। सती के जले हुये शरीर को देख कर भगवान शिव अपने आप को भूल गये। उन्होंने सती के मृत शरीर को ले कर प्रचण्ड़ ताण्डव नृत्य आरम्भ किया और उसके वेग से यक्ष के साम्राज्य का नाश कर डाला। ताण्डव का वेग सम्पूर्ण बृह्माण्ड को नष्ट करने के लिये पर्याप्त था। भयानक संकट उपस्थित देख कर सृष्टि के पालक भगवान विष्णु शिव की बेसुधि में अपने चक्र से सती के शरीर के एक एक खण्ड को काट कर गिराने लगे। जब शरीर पूर्णतः खण्डित हो कर पृथ्वी पर गिर गया तब शिव पुनः अपने आप में आ गये। कहा जाता है सती के शरीर के ये खण्ड पृथ्वी पर जहाँ जहाँ गिरे वह स्थान शक्तिपीठ के रूप में परिवर्तित हो गये। तदुपरान्त भगवान शिव ने हिमालय पर्वत पर जा कर घनघोर तपस्या आरम्भ कर दी।

सती ने शरीर त्यागते समय संकल्प लिया था कि मैं राजा हिमालय के घर जन्म ले कर पुनः शंकर जी की अर्धांगनी बनूंगी। सती ने राजा हिमालय के घर पार्वती के रूप में जन्म लिया। कहा जाता है कि पार्वती ने शिव की तपस्या को समाप्त करने के लिये घोर प्रयास किया। साथ ही शिव का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिये कामदेव की मदद ली जो प्रेम और काम के देव के रूप में जाने जाते हैं। कामदेव ने पार्वती से भगवान शिव के सम्मुख नृत्य करने के लिये कहा। जब पार्वती नृत्य करने लगीं तो कामदेव ने शिव पर पुष्पायुध का पुष्पवाण चला दिया। इस पर भगवान शिव ने कुपित हो कर अपना तीसरा नेत्र खोल कर कामदेव को भष्म कर दिया। कहा जाता है कि बाद में कामदेव की पत्नी के अनुनय पर शिव ने कामदेव को पुनर्जीवित कर दिया।

अब शिव को मनाने के लिये पार्वती ने भी घोर तपस्या आरम्भ कर दी। ऋषियों, देवताओं के कहने और पार्वती के भक्तिभाव और अनुनय से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने तपस्वी रूप को त्याग कर गृहस्थ जीवन में प्रवेश हेतु पार्वती से विवाह सहमति प्रदान कर दी और फागुन की अमावस्या से पूर्व रात्रि बेला को वैवाहिक बंधन मे बंध गये। इस दिन को हम लोग महाशिवरात्रि के रूप में मनाते हैं। शिव पुराण के अनुसार महाशिवरात्रि के दिन शिव आराधना करने से शिव खुश होते हैं। भक्तगण इस दिन वृत/ उपवास रखते हैं और पूजा अर्चना करते हैं। शिवपुराण के अनुसार इस दिन शिव लिंग पर विशेष अभिषेक करने की परम्परा है। इस अभिषेक पांच विशेष द्रव्यों का उपयोग किया जाता है। यह द्रव्य हैं

1 दूध जो शुद्धता और पवित्रता का प्रतीक है।
2 दही जो पवित्रता और सन्तान प्राप्ति हेतु शुभ है।
3 शहद जो मृदु और मीठी वाणी के लिये है,
4 घी जो विजय का प्रतीक है।
5 चीनी जो खुशी का प्रतीक है और
6 पानी जो शुद्धता का प्रतीक माना जाता है।

महाशिवरात्रि के दिन सभी भक्तगण उपवास रखते हैं। ये व्रत महिलायों और कन्याओं के लिये विशेष महत्व रखता है। मान्यता है कि यह व्रत रखने से अविवाहित कन्याओं को शिव जैसे आदर्श पति की प्राप्ति होती है और विवाहित महिलायें पुत्र प्राप्ति तथा अपने पति की उज्वल भविष्य की कामना के लिये इसे करती हैं। इस दिन भक्त सुबह उठ कर स्नान कर सबसे पहले सूर्यदेव की पूजा अर्चना करते हैं और सर्वप्रथम सूर्यदेव को जल अर्पण करते हैं। फिर शिवालय जा कर जय शिव शंकर, जय भोलेनाथ के उद्घोष और घण्टियों की गूंज के बीच उपरोक्त छः पवित्र वस्तुओं से शिवलिंग को स्नान कराते हैं। तदुपरान्त उस पर सिन्दूर का लेप लगा कर अभिषेक पूर्ण करतें हैं। अन्त में शिव के क्रुद्ध स्वभाव को शान्त करने के लिये तीन पूर्ण पत्तियों वाले बेल पत्र को शिवलिंग के ऊपर रखते हैं। कुछ लोग सुपाड़ी के पत्तों का भी उपयोग करते हैं। साथ ही प्रभु को दीर्घायु तथा मनोकामनाओं के पूर्ण करने हेतु बेर का फल अर्पित करते हैं। पूरे दिन के वृत के बाद रात्रि में फलहार कर वृत समाप्त किया जाता है। हिन्दू धर्म में महाशिवरात्रि व्रत का विशेष महत्व है।

व्रज संस्कृति और वृंदावन

- कैलाश चतुर्वेदी, कासगंज

वनं वृंदावन नाम पशव्यं नव कानन ।
गोप गोपीगवां सेव्य पुण्यादि –तृण–विरूधम।।

समाज के उदात्त

संस्कारों का पुंज संस्कृति है। आत्मिक ,मानसिक एवं बौद्धिक क्षेत्रों में व्यक्ति व समाज की 'सम्यक वृत्ति' उनकी समग्र उपलब्धियां संस्कृति कहलाती है। संस्कृति में ही संस्कारों की गतिशीलता होती है। संस्कृति– संस्कारों की डोर पूर्वजों से प्राप्त होकर हमारी संतति तक हस्तांतरित होती रहती है ।इसलिए हमारे पूर्वजों ने जीवन का एक लक्ष्य निर्धारित किया एवं तदनुरूप समाज– नीति –उपासना– धर्म – शिक्षा एवं दर्शन के स्वरूपों को निर्धारित एवं स्थापित किया। व्रज संस्कृति भारतीय संस्कृति की मूल घटक और शाश्वतता व आध्यात्मिकता की दृष्टि से अति समाहता रही है । व्रज संस्कृति का सुनिश्चित लक्ष्य निष्काम प्रेम सेवा है क्योंकि वह समग्रता ,समवेतता,समन्वय एवं संपूर्णता की संस्कृति है। गोष्ठ ,घोष इति प्रोक्तों ब्रजः

अभिदान कोष के अनुसार गायों के स्थान को घोष एवं गोपालों के स्थान को व्रज कहा गया है ।इस दृष्टि से व्रज संस्कृति, ब्राह्मण ,गाय ,गोपाल, रंज ,गुंजा, गोवर्धन व यमुना की संस्कृति है। श्रम, ज्ञान एवं माटी का सम्मान भगवान श्री कृष्ण का स्वमत है –

एतन्मम मतं तात क्रियतां
यदि रोचते।
अयं गो –ब्रह्मणादि दीनां महां च दयितो महाः।।

ब्रज संस्कृति में ही प्रेम, सेवा भाव एवं आनंद है।

रज– यमुना एवं वृक्ष प्रणम्य है ।व्रज संस्कृति ने कृति को हटाकर मानव को माटी से जुड़ने की शिक्षा दी ,इसलिए सर्वप्रथम वृंदावन की वंदनाकर फिर उपासना में आगे बढ़ने की बात कही गई है –

प्रथम यथामति अनतहु वृंदावन अतिरम्य
श्री राधिका कृष्ण बिना सबके मनहि अगम्य।।

मथुरा माहात्मय में व्रज के तीन मण्डलों अंर्तमण्डल, मध्यमण्डल एवं वहिमण्डल का उल्लेख है। अंर्तमण्डल में मुख्य वृंदावन ही उपासको रसिको एवं कवियों का प्रियतम रहा है। पंच योजनात्मक अंर्तमण्डल को भगवद् देह रूप कहा गया है–

पंच योजनमेवास्ति कं में देह रूपन्कम।

वृंदावन ब्रज के सभी चार रसों– उज्जवल,सरव्य, वात्सल्य एवं दास्य का स्थान व कुंज निकुंजात्मक है ।

व्रजमण्डल के अंतर्गत 12 वन है– मधुवन ,कुमुदवन, काम्यकवन,वहुलवन, भद्रवन, रवादिरवन ,श्रीवन, महावन, लोहजंघवन, विल्ववन , माण्डरिवन तथा वृंदावन। सभी वनो का विपुल माहात्मय है, वृंदावन का तो कहना ही क्या। मथुरा से 6 मील उत्तर वृंदावन श्री राधा –कृष्ण की निकुंज – लीलाओं की प्रधान रंगस्थली है और इसकी अधिष्ठात्री श्री वृंदा देवी है। इसीलिए इसको वृंदावन कहते हैं। वृंदावन को पृथ्वी का परम उत्तमोत्तम व परम गुप्त भाग कहा गया है –

गुहयाद् गुहयतमं रम्यं मध्यं वृन्दावनं भुवि।
अक्षरं परमानन्दं गोविंद स्थान भव्ययम ।।

यह साक्षात भगवान का शरीर है, पूर्ण ब्रह्म सुख का आश्रय है। यहां की धूल के स्पर्श से मोक्ष प्राप्त होता है–

गोविन्द देहतोःभिन्नं पूर्णब्रह्मा सुखाश्रयम।
मुक्तिस्तत्र रंजः स्पर्शात तन्माहात्मयं किमुच्यते।।

कहा जाता है कि एक बार मुक्ति ने माधव से पूछा केशव मेरी मुक्ति का उपाय बतलाओ। प्रभु ने कहा बस जब व्रज – रज तेरे सिर पर उड़कर पड़ जाय तब तू अपने को मुक्त हुआ समझ– मुक्ति कहै गोपाल सों, मेरी मुक्ति बताय।

व्रज–रज उड़ि माथे परे, मुक्ति मुक्त हो जाय।।

धन्य है व्रज रज की महिमा। सहस्त्र पंखुड़ियों से युक्त कमल का मध्यकोष वृंदावन के स्पर्श मात्र से पृथ्वी तीनों लोकों में धन्य हुई। श्री राधा वृंदावन की अधीश्वरी और श्री कृष्ण वृंदावन के अधिश्वर हैं –

राधा एवं कृष्ण मेरे जीवन के एकमात्र आश्रय है–

वृंदावनेश्वरी राधा कृष्णो वृंदावनेश्वरः।
जीवने निधने नित्यं राधाकृष्णौ गतिर्भम ।।

भगवान श्री कृष्ण की पावन लीला भूमि वृंदावन वंदनीय अभिनन्दनीय है ।

।। श्री कृष्णःशरणम मम ।।

श्री चैतन्यमहाप्रभु

- मनोज चतुर्वेदी, लखनऊ

भारत के एक बहुत महान संत हुए जिन्हें उनके भक्त भगवान श्री कृष्ण का अवतार मानते हैं। श्री चैतन्यमहाप्रभु ने बंगाल में भक्ति की ऐसी धारा बहाई जो आज पूरे विश्व में फैल गई है। श्री चैतन्य का जन्म बंगाल के नवदीप गांव में १८ फरवरी १४८६ में श्री जगन्नाथ मिश्रा और शची देवी के दूसरी संतान के रूप में हुआ।श्री चैतन्य का रंग बचपन से ही बहुत गोरा था अतः उन्हें गौरांग भी बुलाते थे। कहा जाता है कि गौरांग का जन्म नीम के पेड़ के नीचे हुआ था अतः उनका एक नाम निमाई भी था। गौरांग का वास्तविक नाम विशंभर मिश्रा था। चैतन्य उनका संन्यास का नाम था।

सन १५०९ में श्री चैतन्य अपने पिता का श्राद्ध करने गया गए जहां उनकी भेंट श्री ईश्वर पुरी से हुई जिन्होंने श्री चैतन्य को गोपाल कृष्ण मंत्र की दीक्षा दी जिससे श्री चैतन्य में बहुत परिवर्तन आगया। अबतक श्री चैतन्य एक विख्यात विद्वान के रूप में जाने जाते थे लेकिन दीक्षा के पश्चात वे भगवान श्री कृष्ण के प्रेम में लीन एक भक्त के रूप में बंगाल वापस आए।

२४ वर्ष की आयु में श्री चैतन्य नें स्वामी केशव भारती से संन्यास की दीक्षा ली और विशंभर मिश्रा का नाम कृष्ण चैतन्य हो गया। श्री चैतन्य ने पूरे भारत का भ्रमण किया। पूरे भ्रमण के दौरान वे श्री कृष्ण का नाम जपते रहे।

श्री चैतन्य वृंदावन आए और उन्होंने वे स्थान खोज निकाले जहां श्री कृष्ण ने लीलाएं करी थीं। श्री चैतन्य ने बंगाल से अपने ६ शिष्यों को वृंदावन बुलाया और भगवान श्रीकृष्ण के मंदिर बनवाने का आदेश दिया। ये मंदिर सप्त देवालय कहे जाते हैं और आज भी इन मन्दिरों में पूजा होती है। ये मंदिर हैं (१) श्री राधा गोविंद मंदिर (२) श्री गोपीनाथ मंदिर (३) श्री मदन मोहन मंदिर (४) श्री राधा रमण मंदिर (५) श्री दामोदर मंदिर (६) श्री श्याम सुंदर मंदिर (७) श्री गोकुलानंद मंदिर।

वृंदावन में श्री चैतन्य की भेंट एक बालक श्री नित्यानंद से हुई। नित्यानंद ने १२ वर्ष की आयु में संन्यास ले लिया था और वे वृंदावन में ही रहते थे। श्री चैतन्य नित्यानंद को अपने घर नवदीप ले आए। श्री चैतन्य ने अपनी माता से कहा इस बालक को आप अपने बड़े पुत्र विश्वरूप ही समझें। श्री चैतन्य के बड़े भाई विश्वरूप ने भी १६ वर्ष की आयु में संन्यास ले लिया था। नित्यानंद का नाम निताई हो गया। जब हम श्री

चैतन्य की फोटो देखते हैं तो उसमे दो बालक दिखते हैं। गोरे रंग के श्री चैतन्य(निमाई) और दूसरे निताई।

श्री चैतन्य और निताई पूरे बंगाल में श्री राधाकृष्ण का कीर्तन करते घूमते थे। इनका कीर्तन इतना मधुर होता था कि लोग इनके पीछे घर छोड़ कर हरि बोल हरि बोल गाते हुए चल पड़ते थे। पूरे बंगाल में श्री चैतन्य के असंख्य भक्त हो गए। श्री चैतन्य ने अपने जीवन के अंतिम २४ वर्ष जगन्नाथ पूरी के राधाकांत मठ में बिताए। श्री चैतन्य के अनेकों चमत्कारों को वर्णन अलग अलग पुस्तकों में वर्णित है। श्री चैतन्य ने अपने शिष्यों से कहा कि कलयुग में श्री कृष्ण का नाम ही श्री कृष्ण के चरणों को पाने को मुख्य मार्ग होगा। श्री चैतन्य ने एक महामंत्र दिया जिसका जाप हर कोई कर सकता है, हरे राम हरे राम ,राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे

श्री चैतन्य ने कहा नाम कीर्तन सारे पापों को नष्ट करने वाला है और मनुष्यों के हृदयों को पवित्र करता है। श्री कृष्ण का नाम सर्व शक्तिमान है और कहीं भी, कभी भी लिया जा सकता है। श्री चैतन्य ने कहा कि ईश्वर की पूजा जिस रूप में करें उसमे प्रेम अवश्य होना चाहिए। सारा संसार ईश्वर का है, ईश्वर हमसे सिर्फ निशर्त प्रेम ही चाहते हैं और कुछ भी नहीं। श्री चैतन्य ने १४ जून १५३४ में पुरी में देह त्याग कर श्री कृष्ण में विलीन हो गए।

सभी पाठक जन प्रेम से बोलिए हरि बोल हरि बोल।

स्वर्ण से बहुमूल्य सुकन्याओं / महिलाओं के लिए निवेश के विकल्प

- सीए भव्य चतुर्वेदी, इंदौर

पूत कपूत तो क्यों धन संचय, पूत सपूत तो क्यों धन संचय – यह कहावत अनेकों बार सच साबित होती देखी जाती है, परन्तु हर व्यक्ति अपने सामर्थ्य से अधिक अपने बच्चों के लिए जीवन आसान बनाना ही चाहता है। इसे संदर्भ में आर्थिक निवेश के विकल्प जो विशेषकर सुकन्याओं और महिलाओं के लिए हैं –

1) सुकन्या समृद्धि योजना :

सुकन्या समृद्धि योजना सरकार द्वारा 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' अभियान के तहत शुरू की गयी छोटी बचत स्कीम है. ब्याज सरकारी बॉन्ड की यील्ड की तुलना में 0.75 फीसदी तक अधिक होता है और हर तिमाही सरकार ब्याज दर तय करती है. अभी स्कीम के तहत 7.6 फीसदी ब्याज मिलता है।

खाता खुलवाना: सुकन्या समृद्धि खाता किसी भी पोस्ट ऑफिस या बैंक की शाखा में खुलवाया जा सकता है. सुकन्या समृद्धि खाता बेटी के माता-पिता या कानूनी अभिभावक उसके नाम से खुलवा सकते हैं. इसे बेटी के जन्म से उसके 10 साल का होने तक खुलवाया जा सकता है। इस योजना में खाता खुलने के दिन से 15 साल तक पैसे जमा कर सकते हैं।

सुकन्या समृद्धि खाते से आंशिक निकासी के नियम: खाताधारक की वित्तीय जरूरतें पूरी करने के लिए खाते से आंशिक निकासी की जा सकती है. इनमें उच्च शिक्षा और शादी जैसे काम शामिल हैं. खाते से यह निकासी तभी संभव है, यदि अकाउंट होल्डर 18 साल की उम्र पार कर ले. सुकन्या समृद्धि अकाउंट से रकम निकालने के लिए एक लिखित आवेदन और किसी शैक्षणिक संस्थान में एडमिशन ऑफर या फीस स्लिप की जरूरत होती है. माता-पिता चाहें तो 18 साल की उम्र में बेटी की शादी होने पर भी रकम निकल सकतें हैं।

टैक्स छूट: इनकम टैक्स कानून के सेक्शन 80C के तहत सुकन्या समृद्धि योजना में निवेश करने पर टैक्स छूट भी मिलती है. यानी सालाना अधिकतम 1.5 लाख रुपये के निवेश पर आप टैक्स छूट का फायदा उठा सकते हैं. सुकन्या समृद्धि स्कीम से मिलने वाला सारा रिटर्न भी टैक्स फ्री होता है।

2) सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड स्कीम :

स्वर्ण से हर स्त्री का लगाव सर्वविदित है। अगर स्वर्ण में ऐसा निवेश मिले जो 8 वर्ष बाद स्वर्ण के बाजार मूल्य के बराबर रकम वापस दे, साथ ही हर वर्ष 2 .50 % ब्याज मिले और परिपक्वता (8 वर्ष) पर हुए लाभ पर कोई टैक्स न लगे, ऐसी है ₹सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड स्कीम₹। यह गोल्ड बॉन्ड भारत सरकार की ओर से रिजर्व बैंक जारी करता है। यह फिजिकल गोल्ड रखने के लिए विकल्प है।

निवेश कौन और कैसे : सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड में हर वह व्यक्ति (नाबालिग भी), और एक हिंदू अविभाजित परिवार (HUF) जो कि भारत में निवास करता हो, न्यूनतम 1 ग्राम से लेकर अधिकतम 4 किलो तक निवेश कर सकता है।

सॉवरेन गोल्ड बॉन्ड का उपयोग क़र्ज़ लेने के लिये कोलैटरल के रुप में भी किया जा सकता है। इन बॉन्ड्स को एक्स्चेन्जों में ट्रेड किया जा सकता है ताकि इन्वेस्टर्स समय से पहले भी अगर चाहें तो एग्ज़िट कर सकते हैं, पर परिपक्वता के पहले होने वाले लाभ पर टैक्स लगता है।

यह बांड्स प्राइवेट, सरकारी बैंकों और विभिन्न ब्रोकर्स के माध्यम से ख़रीदे जा सकते है।

टैक्स छूट: परिपक्वता पर मिलने वाला सारा रिटर्न (कैपिटल गेन) टैक्स फ्री होता है।

सर्वश्रेठ सलाह: अगर इसमें ऑनलाइन निवेश किया जाये तो स्वर्ण के जारी भाव पर प्रति ग्राम 50 रूपये कि छूट भी मिलती है। महिला दिवस पर यह एक शानदार भेंट साबित हो सकती है।

निवेश मंत्र: सर्वप्रथम उपयुक्त जीवन और स्वास्थ्य बिमा अवश्य कराएं जिससे की आड़े समय में आपके सपनों और अपनों को चोट न पहुंचे। निवेश के लिए तो बहुत से विकल्प हैं जैसे की शेयर बाजार, फिक्स्ड डिपाजिट, बांड्स, ओवरसीज इन्वेस्टमेंट, इत्यादि, पर हमेशा ध्यान रखें के आपका ध्येय क्या है और नुक्सान सहने की क्या क्षमता है। आपका ध्येय कुछ भी हो सकता है जैसे की उच्च शिक्षा, शादी, सैर, गाड़ी, रिटायरमेंट, घर, दान पुण्य आदि। पहले अपना ध्येय तय करें और उसको पाने में जितना पैसा चाहिए उस हिसाब से बचत करना शुरू करें। विशेषकर नौजवान युवक युवतियां एक गुरु मंत्र याद रखें ₹पहले बचत फिर खर्चे₹ । इससे निश्चित ही आर्थिक मोर्चे पर हमेशा प्रसन्नता रहेगी।

होली : पारम्परिक त्यौहार

- लोकेन्द्र नाथ चतुर्वेदी (फरौली/गाजियाबाद)

होली त्यौहार अपने समाज में एक विशिष्ट स्थान रखता है। वृज क्षेत्र में होली का गायन प्राचीन काल से ही चला आ रहा है। जिसकी रागों का क्रम है, जो पीलू, काफी से आरम्भ होकर धमार, लेह, पैंडा, दीपचन्दी, चाल, रसिया, विहाग, भैरवी आदि रागों में गायी जाती है। होली का यह दीर्घकालीन त्यौहार माघ शुक्ल पंचमी से प्रारम्भ होकर फाल्गुनी पूर्णिमा-चैत्र कृष्ण प्रतिपदा तक चलता है।

होली गायन बसन्त पंचमी के दिन प्रारम्भ होता है और ढोलक, हारमोनियम, मंजीरें की थाप पर होली गायन के स्वर स्वतः ही उठने लगते हैं:

आयो बसन्त कहौ उन हरि सों, बौरे, अम्ब बन फूली है सरसों।।
फूले कमल उमगे दोउ जुबना, गयो चितचोर कहाँ या ब्रज सों।।
औरन सों वे हँसत खिलत हैं, हम तरसें वाके दरसन बरसों।।
ऐसौ मन होय, छुड़ाय लाऊँ सजनी, मोहन प्यारे कों कुबजा के करसों।।
राह चलन दुर्लभ भयौ सजनी, अजहुँ न भेंट भई उन हरि सों।।

कृष्ण गोपियों के संयोग के शालीन चित्रण हैं इसमें, कृष्ण विरह जैसी मर्मस्पर्शी वेदना है:

जो तुम श्याम कूबरी से राजी, कूबरी आजु कहाँ तें ल्याऊँ।।
कालिन्दी सों जल भरि ल्याऊँ, प्रेम सहित असनान कराऊँ।।
अतर फुलेल मलौं तेरे मुख पै, घिसि-घिसि चन्दन अंग लगाऊँ।।
चंदन काटि कें पलँग बनाऊँ, रेशम बाननि तै बनवाऊँ।
तोसक तकिया गिलम गेंडुआ, अगल बगल गुलसुइयाँ लगाऊँ।
कदली खम्भ विरिछ उदबुद के, बिच-बिच मौलसिरी लगवाऊँ।
नये-नये पात मँगाइ आम के, द्वारे पै बन्दनवार बँधाऊँ।

वृज की कुंज गलियों में वनमाली छिपे हैं और किशोरी जी की होली नन्द लाला को पकड़ लाती हैं:

ब्रज कुंजन में जाइ, पकरि लाई, नंद को लाला।।
हा हा करावत पैयाँ परावत, ब्रज की बाल गुपाला।
एक सखी कर पकरि नचावत, बहुत बजावत गाला।।
पाँय पैंजनी अधिक विराजै, बेंदी भाल विशाला।
बेसरि की छवि कहाँ लगि बरनौं, झूमि रही मोती माला।।
आँखिन अंजन मुख बिच मंजन, लोग कहैं ब्रज बाला।
आनि जसोमति यह छबि निरखति, मोहन मुरलीवाला।।
वृन्दावन की कुंज गलिन में, खेलि रहे नंद लाला।
'सूर' श्याम छबि कहाँ लगि बरनौ, मोहि लईं ब्रजवाला।।

सृष्टि का स्वामी गोपियों के द्वारा कितना विवश है, तरह-तरह के नाच-नाच रहा है? उसे नाचने में सुख मिलता है या स्वयं नाचने में?

गारी दई और कांकर मारौ, अब कैसे घर जाउगे लला।।
कांकर मारि गली भयौ ठाढ़ौ, अबकैं बदलौ मैं लैऊंगी लला।।
छीनि लेंऊँ तेरी लकुट कमरिया, तब कैसे इठिलाउगे लला।।

होली से अच्छा अवसर और कौन सा होगा, जब ऐसा श्रृंगार किया जाय और शुभ मुहुर्त देखकर मनमोहन का वशीकरण किया जाय:

साजि कैं जो चली, रँगीली खेलन होरी।।
करि सिंगार माँग मुतियन भरि, साधि चली सुधरी।
नैनन अंजन आँजि कें, मानों बाढ़ि सिरोही धरी।।
सासु बुरी घर ननद हठीली, सैयाँ ने गारी दई।
तू मदमाती फिरति ग्वालिनी, कुंजन काहे गयी।।
मैं जमुना जल भरन जाति ही, मोहन घेरि लयी।
अबकी फाग प्रिय तेरे सँग खेलौं, यह अभिलाष रही।।

तभी बेचारी मन में विसरती है:

ऐसे कहाँ मेरे भाग, पिया संग खेलों होरी।।
काऊ सौतिन संग खेलत हुइहैं, पिया रंग भरि-भरि झोरी।
अपनी बिथा का सौं कहौं सजनी, भाग भलौ उनको री,
पिया संग खेलैं जो होरी।।
जबसे पिया परदेस गमन कियौ, सुधि हूँ न लीन्हीं मोरी।
मैं बैठी यह सगुन विचारों, कब आवै बारी मोरी,
पिया संग खेलौ मैं होरी।।

तब क्यों न इर्ष्या हो, किशोरी जी के सौभाग्य से वृजराज स्वयं किशोरी जी के दास बने घूमते हैं, मुरली में पुकारते हैं, रुठने पर मनुहार करते हैं, रास रचाते हैं, रास्ता बुहारते हैं, फूल विछाते हैं और पैरो में महावर भी लगाते हैं:

तू बड़भाग सुहाग भरी, ब्रजराज तेरे घर आवत है री।।
जो कबहूं तू मान करै, बहियाँ गहि तोहि मनावत है री।।

तोहि रिझाइ भली विधि सों, मुरली में तेरौ जस गावत है री।।
जो कबहूँ तू बन कों चलैं, पाछे सें तेरे उठि धावत है री।
तोहि लै बन में रास करै, मग झारत फूल बिछावत है री।।
सारद सेस महेस रटैं, चतुरानन ध्यान न आवत है री।
सोई अब 'सूर' भयौ बस तेरे, महावर पाँय लगावत है री।।

महाज्ञानी उद्धव के सारे तर्क कुंठित हो जाते हैं:

बहुत दिनन के रुठे श्याम, चलौ होरी में मनाय लावें रे।।
अबीर रोरी मलिकैं गुलाल म्हों मसलि कैं, गरवा लगाइ लावें रे।।
केसरि कुसुम के माटन रँग भरि भरि, फगुआ खिलाइ लावें रे।।
जुगुति-जतन सों, श्री नंद के नन्दन कों, गोदी में उठाय लावें रे।।
चोवा चंदन अतर अरगजा, रंग बरसाइ लावें रे।।

बृजराज के आते ही होली का हुडदंग शुरु:

अबकी होरी मैं खेलौंगी डटिकैं, जो श्याम आवेंगे ब्रज में पलटिकैं।।
जो श्याम मोसों बरजोरी करिहैं, गारी मैं देउँगी घुँघटा पलटिकै।।
एक कुमकुमा ऐसौ मैं मारूँ, जो बंसीवारे की आँखिन करकै।।
जो श्याम हमसों रूठि जायँगे, बिनती करौंगी मैं पकरि कै।।
मैं तो जानति नाहीं वाकौ नाम गाम,
मेरी बहियाँ पकरि लीन्ही थाम थाम।।
श्याम-बरन, बरनत न बनत मोपै,
मनहुँ कोटि छवि सिन्धु थाम।।
मंद हँसनि, दामिनी सी दसन-दुति,
पीत वसन ओढ़ें ललाम।।
कर मुरली उर में वनमाला,
सीस मुकुट अनमोल काम।
केसरि रँग छिरकौ तोरी सारी, कपोलनि कौने दियौ री गुलाल।।
मारग चलत आनि चहुँ दिसि तें, पूछति हैं ब्रज बाल।।
नहिं चितवति नहिं बोलति नेकहु, कौने कियौ यह हाल।
'राम प्रताप' कहति क्यों न साँची, तोहि मिलै नंदलाल।।

होली जैसा अवसर कहाँ मिलेगा, खुली चुनौती:

मोहन तुम जिनि ढीठ लँगर हौ, हमहूँ तुम सन अगरीं।।
हमरौ गाँव बरसानौ कहियत, तुम्हरी गोकुल नगरी।।
तुम्हरे सँग में ग्वाल बहुत हैं, हमहूँ सखियाँ सिगरी।।
तुम्हरे सिर पर मोर मुकुट है, हमरे सिर पर चुनरी।।
सजि सजि आवत है ब्रज बाल खेलन होरी, शशिबदनी मृग नैनी।
केसरिया सिर चीर बसन्ती, फूलन गूंथी है बैनी।।
बाँयौ हाथ नचावत आवत, बोलत कोकिल बैनी।
'रँगीले लाल' अँखियाँ अलसानी, झुकी हैं सावन कैसी रैनी।।

और चलिये हम सब देखें:

चलौ देखियै बरसाना, जहाँ मची रंगीली होरी।।
निकसीं भवन-भवन तें, हाथों गुलाल रोरी।
मनुहार कैसी झलकै, मानों प्रेम रंग बोरी।।
अबीर गुलाल की घुमड़नु में, पकरे है नंदलाला।
फगुआ हमारौ दीजै, हंसि माँगतीं बृज वाला।।
बाजै रबाव भेरी, ढपताल और मृदंगा।
दीनारा बीन बाजै, महुअरि मुहचंग उपंगा।।
नंदनंदन श्री गिरधारी, बृषभानु की दुलारी।
'रसखान' खैलैं होरी, चिरजीव रहे यह जोरी।।

फिर तो वर्षा कैसी कि सावन भी तरसे:

पौरी वृषभानु की, आजु रंग झर बरसै री।।
उड़त गुलाल लाल भए बादर,
बीच कुमकुमा की मूँठि, घननि जैसे दामिन दमकै री।।
खेलत हैं दामिनि धन सुन्दर,
कृष्ण रसिक संग री।
'दया सखी' फागुन के दिननि में, सावन सरसै री।।

और रंग ऐसा कि धरती अम्बर सब लाल:

लाल ही लाल भये, होरी खेलि रहे नन्दलाल।।
लाल लली ललकारि दुहूँ दिसि, उड़ि रहे लाल गुलाल।
वे उनके कंचुकि तकि मारत, वे तकि मारत गाल।।
लाल भयौ सिर पेच लाल कौ, पट जामा भये लाल।
दल समेत भयीं लाल लाड़लि, लालन के गल माल।।
लाल भयी छिति गगन लाल भये, ससि उड़गन भये लाल।
उड़त गुलाल लाल भये बादर, रवि मंडल भयौ लाल।।
लाल लाल सब ग्वाल बाल भये, ब्रजवासी भये लाल।
लालन ललित लाल लखि लाला, पल फेरत भये लाल।।

देखिये यमुना तट पर हुडदंग मचा है:

हो हो कहि दौरीं, अहो ब्रज बाल।
भरि भरि घट बंशीबट के तट, दै दै ओट तमाल।।
इत सुगन्ध लियें दीनबन्धु, उत भरत भामिनी भाल।
पियत पियूष चन्द लागत मानों, खुले है व्याल के जाल।।
इत उझकत पियरौ पट पहिरें, मानौं फूले कंज सनाल।
मुख देखत ऐसी लागति मानों, बुझि बरि उठत मसाल।।
'विद्याराम' दृगन देखत ही, मृगन भूलि गई चाल।
खेलि फग हिलि मिलि रस बस करि, घर आये नँदलाल।।
और देखिये लाडली जी ने मान क्यों करा है- रुठना और मनाना?
लाड़लि मान न करियै, होरी के दिनन में, कहा तुम्हारी बान।
बरस दिना कौ द्यौस लाड़लि, बैठी हौ भौंहे तान।।
मानि सिखावन लेहु आपनें, यह जिय में धरि ध्यान।
'गुनविलास' पिय दूरि उठि चलौ, रूप केलि की खान।।

क्यों न करे मान, देखिये कारणः

तुम भोरही आये होरी खेलन, राति कौन के रंग में रँगे हो लाल।।
पलक पीक अंजन अधरन अरू, दियौ है महावर तिलक भाल।
'राम प्रताप' चतुर भामिनी बे, जिन मुख कियौ है गुलाल लाल।।

किन्तु इस ढीट के आगे मान भी नहीं चला और नया खेलः

श्यामा श्याम सों होरी, खेलत आजु नई।।
नन्दनंदन कों राधे कीन्हों, माधव आपु भईं।
सखीं सखा भईं, सखा सखी भए, जसुमति भवन गई।।
गोरे स्याम साँवरी राधा, यह मूरति चितई।
बाजत ताल मृदंग झाँझ ढ़प, नाचत हैं थेई थेई।।
पलटौ रूप दखि माधव कौ, जसुमति चकित भई।
'सूर' स्याम कौ वदन विलोकत, उधरि गई कलई।।

हमें गर्व है अपने पूर्वजों पर जिन्होंने भविष्य को देखते हुए ''रंग झर बरसै री'' पुस्तक के रूप में अपार संग्रह दिया है, जिसका प्रकाशन सम्वत 2020, सम्वत 2046 एवं सम्वत 2066 में हुआ। तदउपरान्त प्रायः गाये जाने वाली होलियों को संजीव रूप देने के लिए ''भदावरी होली'' रंग-सरस आदि पुस्तकों का प्रकाशन हुआ।

फरौली में होली

- सौरभ चतुर्वेदी, लखनऊ

बसंत पंचमी का चतुर्वेदी समाज में हमेशा एक विशिष्ट स्थान रहा है। इस दिन से ही समाज में और ब्रज में होली की धूम मचने लगती है। प्रत्येक ब्रजवासी यही प्रार्थना करता है प्रभु होली वाले दिन हमें कैसे भी हमारे ग्राम पंहुचा दो। वैसे तो होली के त्यौहार का सभी चतुर्वेदी ग्रामों में एक विशेष महत्त्व है। होलीपुरा और मैनपुरी में उत्साह बसंत पंचमी से आने लगता है और धीरे-धीरे यह अपने चरम पर आ जाता है। मेरे बाबा स्व.राजबहादुर जी (रज्जू चाचा) की गाई हुई बहुत सी होलियों को रंग झर बरसै री के प्रथम संस्करण में स्थान मिला था। होली गायन में मेरे गुरु भी थे। गाई हुई होली कौने मल्यो री गुलाल, ऊधौ जी तुम कहो सौत कुब्जा के पिया आनन्द में है,आज भी लोग याद करते हैं। मुझे आज भी याद है बसंत पंचमी से ही गांव के लक्ष्मी नारायण मंदिर में होली गायन की शुरुआत हो जाती थी। हमारे गांव के फूलचंद चाचा(मुनीम जी) ने होली गायन के बहुत शौकीन थे। बड़े उत्साह के साथ हम लोगों को भी गायन के लिए प्रेरित करते थे। हमारी पीढ़ी के कई होली गायक उनकी प्रेरणा से ही आगे आये यह थे मंदिर में होली गायन की शुरुआत सुमंगल दाहिने होरी खेलत राम नरेश से होती थी और बैठक का अंत हमेशा जा काहू कों मिल जाय श्याम कह दीजौ हमरी राम राम से।

यह गायन होली तक निरंतर चलता था।एक किस्सा अपने बचपन का याद आ गया हमारे फूलचंद चाचा हमेशा कहा करते थे कि कापी या किताब से पढ कर होली गायन कभी मत करो,होलियां कंठस्थ करौ। पर हम लोग रंगझर किताब से ही होलियां गाते थे, उन्होंने मंदिर में कहा कि कल से जो भी बच्चा बिना किताब के होली गायन करेगा और जितनी होलियां गायेगा उसको उतनी ही बर्फी इनाम में मिलेगी। बस फिर क्या था सब बच्चों में होड़ सी मच गई। मैंने एक दिन में ही ग्यारह होलियां सुनाई। वो बहुत खुश हुये और मेरे घर पर बर्फी का थाल यह कह कर भिजवा दिया था कि केवल सौरभ ही खायेगा। हमारे ही गांव के तोशनिधि जी का भी होली गायन में समाज में बड़ा नाम था। तोशनिधि जी ने कई धमारो की रचना की। हमारे गांव में होली की पड़वा को होली की शुरूआत लक्ष्मी नारायण मंदिर से ही होती है। वहां से उठ कर छोटे मंदिर पर बैठ कर गायन होता है। उसके बाद फिर हर चतुर्वेदी के घर पर होली होती है, हमारे ही गांव के बंगाली चाचा भी गायन के बहुत शौकीन थे। उनकी गाई होली, होरी हो ब्रजराज दुलारे,आज भी कानों में गूंज रही है। एक व्यवस्था ऐसी भी है जिसका जिक्र यहां करना चाहता हूं कि हमारे गांव में होली पर सिर्फ लाल और पीले रंग से ही होती है। काला नीला हरा रंग पूर्णतः वर्जित, कीचड़ गोबर तो दूर की बात,ऐसा अनुशासन आज कहीं भी देखने को नहीं मिलता। गांव के प्रत्येक चतुर्वेदी घर पर गायन होता है। अगर किसी के घर में गमी है तो उनके यहां भी केवल जामे आवागमन लागी डोरी, हमारे कों खेले ऐसी होरी का गायन बहुत शांत भाव से होता।

: होली :

कौने मल्यौ री गुलाल ,कपोलन कौनै मल्यौ री गुलाल।।
कौने भिंगोई तोरी पचरंग सारी,कौने कियौ ऐसौ हाल।
कपोलन कौने---
रामप्रताप कहौ क्यौ न सांची तोहे मिले नंदलाल।
कपोलन कौने मल्यौ --

भदावर के होली लोकगीत

- भरत चतुर्वेदी ''अचल''होलीपुरा रिसड़ा

फागुनी बयार में, हास्य की फुहार में,
रंगों की धार में होलिका बहार है।
ढोलक की गमक में, युवकों की चहक में,
वृध्दों की बहक में,भंग का निखार है।।
प्रकृति के विलास में,वासंती रास में,
ऋतु के उल्लास में, फागुनी फुहार है।
द्वेष के विनाश में, प्रेम के प्रकाश में,
ऐक्य के विकास में,स्नेह का प्रसार है।।

मूर्धन्य साहित्यकार डा0 प्रेमशंकर त्रिपाठी जी ने उपरोक्त होली के छन्द द्वारा होली पर्व को बखूबी परिभाषित किया है।तभी तो फागुन का महीना हंसी- ठिठोली ,रंग अबीर के हुड़दंग,ढोलक की थाप पर लोकसंगीत की गूंज,भंग की तरंग में हास परिहास,प्रकति के मनोहारी दृश्य का एवं आपसी भाईचारे का पर्व ही तो होली है। यह सच है कि होली का त्यौहार रंग और गुलाल के लिए जितना महत्वपूर्ण है। उससे कहीं अधिक होरी गीतों ने होरी के त्यौहार को आनन्द,उमंग व उल्लास मय बनाया है। होरी गीतों में ढोलक की थाप के मध्य आज भी समवेत होकर जब हुरियारे

जिनि जाउरी आजु कोऊ पनिया भरन, मग रोकत ढोटा श्याम बरन।
डारत रंग भिजोवत अंबर,मटुकी फोरत कंत धरन।
मलत गुलाल हार गल टोरत,डर लागत मोहि कंत डरन।
ग्वाल बाल संग भीर सखीरी,आगें परत नहिं मेरौ चरन।।
फागुन भरि मति जाउकहूं कोउ,बैठि रहौ सब अपने घरन।
झगरत लरत डरत ना नैकहु,कासों कहों को सुनै श्रवनन।
हरिबिलास हरि ढीठ लंगरवा,सबसों लगै लंगराई करन।।

गाते हैं तो होली की धूम का पूरा चित्रण सम्मुख दृष्टिगत हो उठता है।इन गीतों में रंग गुलाल की मस्ती, मधुर व साहित्यिक गालियां,वाद्य यंत्रों का वर्णन,कृष्ण राधा का निःश्चल प्रेम, गोप गोपियों के साथ श्री कृष्ण लीला एवं विरह वेदना का वर्णन होता है। वैसे तो होलिकोत्सव मथुरा में लटमार होली विश्व प्रसिद्ध है। वहीं ब्रजमण्डल के भदावर की होली भी विख्यात है।

भदावर महाभारत काल में भद्रावर्त राज्य था, जो आज भदावर क्षेत्र कहलाता है।हतकांत, भिण्ड एवं अटेर के किला इसके ऐतिहासिक साक्षी हैं, जो आज भी अपनी गौरवगाथा बयान करते हैं। भदावर का क्षेत्र मध्य प्रदेश के भिण्ड, राजस्थान के धौलपुर, आगरा एवं इटावा तक फैला हुआ है। अतः ग्वालियर, तरसोखर, भिण्ड, चन्द्रपुर, कमतरी, कछपुरा, बिजकौली, बटेश्वर, मई, होलीपुरा, पुराकन्हैरा,तालगांव, एवं पिनाहट हम चतुर्वेदियों के गांव भदावर क्षेत्र में आते हैं। क्योकि भिण्ड, मुरैना, इटावा, ग्वालियर,दतिया, धौलपुर, आगरा,जालौन का यमुना, चम्बल,सिन्ध,बेतवा तथा क्वारी के खारों में फैला क्षेत्र ही भदावर क्षेत्र के नाम से जाना जाता है। इन क्षेत्रों में गाये जाने वाले होरी गीतों को हम भदावरी होली कह सकते हैं। वैसे तो मथुरा के होली गीत सूर,मीरा, रसखान, आदि कवियों के पद अधिक हैं,जो मथुरा या मथुरान्त के होली गीत के रुप में प्रचलित हैं।यथा-

जा काहू कों मिलहिं श्याम,कहि दीजौ हमारी राम-राम।
गलिन-गलिन और द्वार -द्वार पै,होरी की है रही धूमधाम।
खान पान राधा तजि दीन्हों, ध्यान तुम्हारो आठों याम।
हरिविलास हरिसौं जाइ कहियो, क्यों छोड़ी राधा सी वाम।।

''हरिविलास '' जी द्वारा रचित उपर्युक्त होली गीत में सखियां कह रही हैं, कि जिस किसी को श्री कृष्ण मिलें। उनसे हमारी राम राम कहना तथा होली की मची इस धूम का विवरण देते हुए कहना कि राधारानी ने तुम्हारे विछोह में सब समय तुम्हारे ही स्मरण में लीन रहकर खान पान का त्याग कर दिया है। काफी राग में गाई जाने वाली ऐसी होरियां वैसे तो मथुरा एवं भदावर में सुनी जा सकती है।

इसके अलावा भदावर क्षेत्र में धमार, रसिया, राजपूती, दीपचंदी, फाग, लेद, चाल एवं पैंडा आदि रागें भी गाई जाती हैं। इनमें कुछ जगह की विशेष राग के लिए अपनी अलग पहचान है। उदाहरण के लिए होलीपुरा की धमार, चन्द्रपुर की राजपूती व तरसोखर की फाग गायकी भदावरी होली के रूप में प्रसिद्ध है। जबकि तरसोखर एवं चन्द्रपुर होली लोकगीतों के रचयिता भी आंचलिक जन हुआ करते हैं। तभी तो कहा भी गया है कि लोकगीत जन सामान्य की उल्लासमय अभिव्यक्ति का सहज एवं सामुदायिक साधन है। यह सच है कि लोक संगीत मानव मन की भावनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से जनमानस के मन में स्थान बना सुव्यवस्थित स्वर धारा के रूप में प्रस्फुटित हुआ है। इसका तरसोखर का इतिहास (पूरक) पुस्तिका में विस्तार से वर्णन किया गया है। ये लोकगीत हर मौसम के लिए अलग-अलग होते थे। उदाहरण के लिए बसंत पंचमी से ही

होली फाग आदि का गायन शुरू हो जाता था। चैत्र की नवरात्रि से लंगुरिया तथा माता देवी के अन्य गीत। होली के गीत कई प्रकार के होते थे। इनमें कुछ तो प्राचीन होरियां होती थीं और कुछ नयी होरियां

स्थानीय लोगों द्वारा खासकर गायकों द्वारा तैयार कर ली जाती थी। कुछ होरी तो संपूर्ण ब्रज मंडल में गाई जाती हैं। इनमें से कुछ का प्रकाशन हो चुका है। हमारे क्षेत्र में इनके अलावा राजपूती भी गाई जाती रही हैं। इनमें से बहुत सी सुखई की हैं। सुखई हमारे क्षेत्र के सर्वाधिक मशहूर स्थानीय गायक एवं राजपूती रचयिता थे। इन होरी गीतों की रचना भी स्थानीय भाषा में हुआ करती थी। उदाहरण के लिए निम्न होरी में जब श्री राम गंगा पार कराने को केवट से कहते हैं तो उत्तर में केवट कहता है –

नाथ पग धोए बिना नैय्या चढऩ ना देंहुंगो।
छुअत ही तरि जाइ स्वामी फिरि कहा ले लेउंगो।।
कुटुम अरु परिवार मेरौ जाही सौं सब पलि रहौ,सांची मानौं,
पाषाण से तरे हैं इस बात की फिकिरि है हां इस बात की फिकिर है।

जाकी है कहा विसाति निबक काठ की। नैंक शोभा बनी घाट की।।

एक अन्य होरी में राधा और कृष्ण के वार्तालाप का रोचक वर्णन है–

कब लगौ दही पै दानु ये नई रीति काढी.आपुने।
तेरी माई पीसे पीसनौं और गउएं चराई बाप ने।।
तू ही अकेलौ ना बिरज में औरु क इयो बसत हैं ढीठ लंगरवा।
काहे कौं गैल घेरें इस बात की फिकिर है,हां इस बात की फिकिर है

नांइ देउ दही की बूंद भरी दोहनी, नाहिं अब तक भई बौहनी।

उत्तर में श्री कृष्ण कहते हैं कि–

सरपटि कैं गहि लई बांह अब तूं कहां बचि कैं जाति है।
सीस तैं मटुकी पटकि दई बहुत क्यों इतराति है।
दही सब ग्वालन में बांटौ अब भई तेरी बोहनी नारि सुजानी।
कंस कौ लिवाइ ल्यइये इस बात की फिकिर है,हां इस बात की फिकिर है।
सांचहु जो पैदा होइ बिरखभान तैं।मति निकरी परै म्यान तैं।

एक अन्य होरी में नरसी व्यथा का वर्णन देखें

नरसी घबराइ रहौ संत पाती बांचि कैं रामा की।
मेरे बाबुल आवें द्वार गठरिया बांधि कैं सामा की।।
जे, पैसा नांहिनै पासु रोज रोज मैं मांगि कैं उदर भरौं।
कहा करौं कित जांउ आजु, काऊ कुआ नदी में डूब मरौं।
पति सांवरिया राखे तौ अदेसौ नहीं तौ अदेसौ नहीं
लिखि परिमानों धरौ तखत पै।हरि सुमिरे ऐनि बखत पै।

जिस गीत का रचनाकार व भाषा अपनी हो और श्रोता एवं गायक अपने हों। तब संगीत की सभी विधायें फीकी लगने लगती हैं। एक लघु बानगी दृष्टव्य है–

मेरे कौन जनम के पाप रोवे सुलोचना।
आठ माघ नौ कातिक न्हाये।दस बैसाख हनाये।।
मैंने खेलौ नौरता नौऊ।हरि दयौ रंडाप़ौ तौऊ।

उपरोक्त होरी में सुलोचना द्वारा भगवान से शिकायत की गई है जिसमें आंचलिक उत्सवों नौती, नौरता आदि का बखूबी उल्लेख किया गया है।यही तो विशेषता है लोक गीत की। इन होरी गीतों की पृष्ठभूमि देव देवियों पर आधारित होती हैं लेकिन क्षेत्रीय रीति रिवाज, भाषा शैली एवं गायकी की भिन्नता ही इन्हें विशिष्टता प्रदान करती है। उदाहरण के लिए चन्द्रपुर में गाई जाने वाली होली इस प्रकार है–

तू काली महारानी,
तेरी,अलख ज्योति जहरानी।तू...
ए,पूरब पश्चिम द्वार बने,
भवन बनौ रजधानी,
सोने के मन्दिर,धरे कंगूरा,
लाल, ध्वजा फहरानी।तेरी....
अरे, ओर पास तेरौ बाग बगीचा,
और पिस तेरो बाग न रे, ऋृष
कोयल,बोलै बानी।तेरी अलख...
ए, हाथ गजा तिरशूल विराजे,
तीन लोक की रानी,
''बालकृष्ण'' तेरौ जसु गामें,
कंठ पै बैठि भवानी।। तेरी अलख...

उपर्युक्त होरी में देवी से प्रार्थना की गयी है जबकि निम्न होरी देखें जिसमें महाभारत प्रसंग की प्रस्तुति की गई है–

भीषम तानों हो, नारायण, सर तानौ।
लै कें बाण,फोंक पै धरि कें, कान,बरोबरि तानों,
तेज प्रचंड अगिनि प्रगटत भई,कृपा सिंधु पहिचानों, हो नारायण सर...
ए, चढे विमान, देवता डरपें, सबरौ दल घबड़ानौ,
दोऊ कर जोरि, कही पारथ नैं,कृपा सिंधु कर ठानो।नारायण..
ए, हंसि के कमल नैन यों बोले, पारथ, भेद न जानों, अस्त्र छांडि,होउगें अस्तर,यही वचन मेरौ मानों।नारायण...
ए, लैंके गदा, भीम भए ठाड़े, तजों न क्षत्री बानों,
इतनों जसु, भारत में करि लेउ, सदा अमर नहिं रहनो, हो।नारायण....

इन होरी गीतों के विषय चिरपरिचित होने के वावजूद भी सभी गायक की ओर टकटकी लगाकर सुनते हुए नजर आते हैं कि अन्तिम पंक्तियों में क्या संदेश है। चन्द्रपुर की इन दो लोकप्रिय होरियों ने क्षेत्र में जगह बनाई है वे हैं

अरे हां यार, जाइ लै दै झमियां,
जाइ लै दै झमियां, झमियन पै, मन लागि रहौ।
आं हां यार, जाकी गोरी गोरी बहियां,
जाकी गोरी गोरी बहियां,हरी हरी चुरियां,
आगें अंगुलियां,पाछें पछिलियां,
बिच बंगलियां, दसौ अंगुरियां,
मुदरी सोहै, बाजूबन्द गाढे।
आं हां यार, अतलस कौ लंहगा,
अतलस कौ लंहगा,घूम घुमारौ,
लगी किनारी, ऊपर सारी,
दस गज कौं डंडिया।
अरे हां यार, जाइ यार बुलावै,
जाइ यार बुलावै, का फरमावै,
पान खवावै, पीक डरावै,
लौंगनि कौ हरवा।
आं हां यार,जाइ बाग तमासें,
जाइ बाग तमासें,सोरह निब्बू,
परसे शिम्भू,और कदम छइयां।

जबकि दूसरी है –

ए, बाजि रही पैजनियां,छम छम बाजि रही।
ए, कौने बनाइ दई पांय पैजनियां,
कौने बनाई करधनियां।
कौनें गढाइ दऔ गरे कौ हरवा,
कौनें नाक नथनियां।।
ए, ससुर बनाइ दई पांय पैजनियां,
जेठ बनाई करधनियां।
देवर गढाइ दऔ गरे कौ हरवा,
सैंया नाक नथुनियां।।
ए, कैसें टूटी पांय पैजनियां, कैसे टूटी करधनियां।
कैसे टूटो गरे कौ हरवा, कैसे नाक नथनियां।।
अरे, पांय हले सों पांय पैजनियां,कमरि हले करधनियां।
खेलत उडि गऔ गरे को हरवा,
पोंछत नाक नथुनियां।।

होलीपुरा में गाई जाने वालु धमार गम्भीर,सहज और शान्त गीत है। धमार गायकी में प्राचीन गायन शैलियों की झलक मिलती है। इसे गाने में कंठ व फेफड़ों पर बल पड़ता है, इसलिए रागों में इसे मर्दाना राग कहा गया है।यहां गाई जानेवाली निम्न धमार –

सजि सजि आवत है ब्रज बाल खेलन होरी, शशिबदनी मृग नैनी।
केसरिया सिर चीर बसन्ती, फूलन गूंथी है बैनी।।
बांयौ हाथ नचावत आवत,बोलत कोकिल बैनी।
रंगीले लाल अंखियां अलसानी, झुकी हैं सावन कैसी रैनी।।

गायकी में एक एक शब्द पर जोर दिया जाता है।इसके अलावा अन्य रागों में रसिया

आज होरी खेलत नन्द किशोर।
चलौ सखी गोबरधन की ओर।।
घर घर सें बनिता बनि आईं, अपने री अपने जोर।
सब सखियन में राधे सोहैं, मोहे मुकुट मनोज।।
मीरा का पद राग विहाग में
है गए श्याम दौज के चन्दा।।
मधुबन जाइ बने मधुबनियां,कुबजा डारौ प्रेम को फन्दा।।
गोकुल सें सब प्रेम बिसारौ, छोड़े बिलखत जसुमति नन्दा।।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, पहलौ प्रेम परौ अब मन्दा।।

भदावर में गायी जाने वाली कुछ रागों की होरियां ही प्रस्तुत की गई हैं। वैसे तो प्रायः सभी राग हम चतुर्वेदियों के गांवों में गायी जाती हैं, लेकिन जिनकी प्रधानता होती है। उसका उल्लेख ऊपर किया गया है यथा तरसोखर में फाग, चन्द्रपुर में ठड्डुआ, होलीपुरा में धमार गायकी की अपनी पहचान है।इसके अलावा बटेश्वर में काफी व रसिया,पुरा तालगांव में राजपूती की प्रधानता है। मैनपुरी की काफी एवं रसिया बेजोड़ है। होरी लोकगीतों के प्रकाशन भी मेवाराम जी द्वारा संकलित भदावरी होली,तरसोखर का इतिहास,रंग सरस एवं रंग झर बरसै री इसके प्रमाण हैं। हालांकि समग्रता के उद्देश्य से रंग झर बरसै री के तृतीय संस्करण में पहली बार तरसोखर एवं चन्द्रपुर के लोकप्रिय होरी लोक गीतों को भी प्रकाशित किया गया था,जिसे हम भदावर क्षेत्र का होली संकलन कह सकते हैं।

कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि मथुरा की भांति भदावर क्षेत्र में होली का उत्सव दर्शनीय है।तभी तो विगत कई वर्षों से होली के अवसर पर होलीपुरा द्वारा आरम्भ होली सम्मेलन आज पुरा,तालगांव एवं होलीपुरा के होली मिलन सम्मेलन में समाज के बान्धव देश के कोने कोने से पहुंचने लगे हैं,आज आलम यह है कि दीवाली के बाद से होली का इन्तजार होने लगता है।इसी इन्तजार को लोकप्रिय साहित्यकार पं विष्णु कान्त शास्त्री जी के शब्दों में कहें तो–

रस की गगरी छलके होली आयी
छैल छबीली चमके, होली आयी
ले प्रेमरंग निकली कान्हा की टोली
कसमस चोली मसके होली आयी।

धमार

- **अशोक चतुर्वेदी**, फरीदाबाद

हो हो कहि दौरीं,अहो ब्रज बाल।
भरि भरि घट बंशीबट के तट, दै दै ओट तमाल।।
इत सुगंध लियें दीनबंधु, उत भरत भामिनी भाल।
पियत पियूष चन्द लागत मानों, खुले है व्याल के जाल।।
इत उझकत पियरौ पट पहिरैं, मानौं फूले कंज सनाल।
मुख देखत ऐसी लागति मानों,
बुझि बरि उठत मसाल।।
'विधाराम ' दृगन देखत ही, मृगन भूलि गई चाल।
खेलि फाग हिलि मिलि रस बस करि,घर आये नँदलाल।।

2) होरी तौ का संग खेलियै हो, मोरे बालम परदेसीरा।।
अब रितु आई बसंत की हो, फूलन लागे टेसुरा।
हमरे बलम सों यौं जाय कहियो, गोरीधन ढारे आँसूरा।।
गहरी नदिया नाव पुरानी, किस विधि पठवों संदेसुरा।
बालापन की अबलों निबही, अब निबहै सो साँचीरा।।

3) होरी खेलै लाल, ढफ बाजै ताल, जैसे झनन झनन झन नन नन नन।।
तेल फुलेल अबीर अरगजा भ्रमर उड़त, जैसें भन नन नन।
निकसीं कुँअरि ए झुमरि खेलन होरी, हस्ती छुटत जैसे सन नन नन।।
कँचन की पिचकारी लाई भरि भरि, डारति सुरँग सबके तन नन।
केसरि रंग की कींच मची है, उमड़ि घुमड़ि धन नन नन नन।।
बृन्दावन की कुंज गलिन में, ग्वाल बाल सब सखन संग।
'तानसेन' के प्रभु हो होरी खेलें,आनँद भयौ सबके मन नन।।

4) लाड़िली मान न करियै, होरी के दिनन में, कहा तुम्हारी बान।
बरस दिना कौ धौस लाड़िली, बैठी हौ भौंहें तान।।
मानि सिखावन लेहु आपने, यह जिय में धरि ध्यान।
'गुनविलास ' पिय दूरि उठि चलौं, रुप केलि की खान।।

5) ए मद छकी ग्वालिनि तेरौ जुबना जोर, हँसि हँसि घूँघटरा क्यों न खोलै।।
फागुन मास में मान करति है, काहे मुख सों सूघें क्यों न बोले।।
रूप कौ भार दिना दस कौ रे, बाँट गुमाननि तौलै।
औसर पाय कै आनँद करिलै, काहे बन बन ऐंड़ी बैड़ी डोलै।।

6) सजि सजि आवत है ब्रज बाल खेलन होरी, शशिबदनी मृग नैनी।
केसरिया सिर चीर बसन्ती, फूलन गूंथी है बैनी।।
बाँयौ हाथ नचावत आवत, बोलत कोकिल बैनी।
रँगीले लाल,अँखियाँ अलसानी, झुकी हैं सावन कैसी रैनी।।

होली

- **ममता चतुर्वेदी** (जहाँगीरपुर/आगरा)

सांवरे रसिया से हो गई अपनी यारी,
हमें प्यारी लगती ये यारी,
ये रसिया मेरे सपने में आवें,
मीठी मीठी तान सुनावें,
जब जाकू में पकडन लागी,
अरे खुल गयी नींद हमारी,
सांवरे रसिया से हो गई अपनी यारी.....
ये रसिया नित माखन चुरावें,
कुछ खावें और कुछ ग्वालन को खिलावें,
जाने तो मेरा हियरा चुराया,
वो है मैरा माखन चोर विहारी,
सांवरे रसिया से हो गई अपनी यारी.....
लट घुंघराली कारी वाकी,
दिल में बसी है सूरत वाकी,
पांव जाऊं उनके बलिहारी,
सांवरे रसिया से हो गई अपनी यारी.....

लला फिर खेलन अईयो लखनऊ में होरी

- सुबोध चंद्र चतुर्वेदी, लखनऊ

60 के दशक,हमारे बचपन में लखनऊ में ऋतुराज बसंत के आगमन की आहट के साथ लगभग हर रविवार को शाह गया प्रसाद धर्मशाला, चारबाग या म्यूनिस्पिल स्कूल नरही में होरी की गम्मदों का श्रीगणेश हो जाता था। भाई साहब कृष्ण गोपाल (मन्नू) जी ढोलक पर, साथ में बृजकिशोर (कल्लू) जी, दिनेश चंद जी, सुरेंद्र नाथ जी,आदि का समवेत स्वरों मे ₹अबकी बेर हमारी लाज राखौ गिरधारी₹, मेरो कुंवर कन्हाई मोसें आज मिलै होरी आज जरै चाहें काल जरै जैसी कालजयी होरियों का गायन। तख्तों का बना स्टेज, चारों तरफ जमीन पर बिछी दरी पर बैठा सजातीय बांधवों का जनसमूह, गुझिया सब अपने-अपने घर से लाते जिन्हें कार्यकर्ता इकठ्ठा मिलाकर सबमें वितरित करते। ठंडाई की व्यवस्था मंडल की ओर से होती। न लाखों का बजट और न चंदे की चिंता, एक याद यह भी कि पृथ्वीनाथ जी के लखनऊ के जिलाधिकारी कार्यकाल में एक गम्मद जिलाधिकारी आवास,लखनऊ में भी हो चुकी है। एक गम्मद में भाई दिलीप (आशियाना) ने आज के प्रतिष्ठित भजन व गजल गायक अनूप जलोटा को भी गवा दिया था। यह है हमारा गौरवपूर्ण अतीत।

वर्तमान में वसंत ऋतु के आगमन के साथ अभी भी प्रायः हर रविवार को किसी न किसी बांधव के निवास पर होरी की गम्मदें आयोजित होतीं हैं,महेश भाई साहब, पदम भाईसाहब, नरेंन्द्र भाईसाहब के नेतृत्व में भाई शैल, विपिन, सुबोध, सौरभ, संतोष, आनंद,प्रफुल्ल,धर्मवीर,यदुवेश द्वय, प्रभाकर, रमेशजी, दिलीप, संजीव,अनुज आदि तथा महिलाओं में उदिता जी,रश्मि जी,पूजा जी, पूनम,नेहा, सुप्रिया आदि बढ़-चढ़ कर इन गम्मदों में सहभागिता करते हैं। हर हाथ में समाज की गौरवमयी प्रस्तुति ₹रंग झर बरसै री₹ शोभायमान रहती है। शुरू करौ-शुरू करौ के शोर के बीच रंग झर बरसै री की किसी एक होरी से गम्मद का श्रीगणेश होता है। फिर तो विजया भवानी की तरंग के साथ उपस्थित जन समुदाय द्वारा राधा कृष्ण और गोपियों के साथ खेली गई सुंदर होरियों जैसे - अंखियन भरत अबीर री,ऐसी चतुर बृजनार रंग में है रही गोरी, गारी न देओ जसुदा के लला, छैला रंग डारि गयो मो पै वीर, डगर मेरी छांड़ो श्याम,नाथ मेरो क्या बिगड़ेगा, नैनन में तकि मारै गुलाल, बहुत दिनन के रूठे श्याम, मै तो नाहीं नाहीं करत रही,मानौ या न मानौ मेरी सुनौ या न सुनौ, श्यामा श्याम सों

आज खेलत होरी नई और सांवरिया तू बेगि खबर लीजौ मेरी जैसी एक के बाद एक सुंदर होरियों की अनवरत प्रस्तुति प्रारंभ हो जाती है। कुछ प्रमुख होलियाँ निम्न है :

1) नैनन में तकि मारै गुलाल,
तेरो छैला गुपाल.
गोकुल गलियन धूम मचावै,
आप नचै और मोहि नचावै
तारी बजावै सब आइ गए ग्वाल-2
तेरो छैला गुपाल.
कर सोहत कंचन पिचकारी,
भरि भरि सो मेरी छतियन मारी,
या ऊधम को कौन हवाल-2
तेरो छैला गोपाल.
रपटि परी हौं केसरि-कीचैं,
वो भओ ऊपर मैं भई नीचे
या ऊधम को कौन हवाल-2
तेरो छैला गुपाल.

2) मानौ या न मानौ मेरी सुनौ या न सुनौ,
मै तो तोई कों न छांड़ौगी अरे सांवरै,
जा में लाज शरम की कहा बात है?
जब प्रेम के पंथ दियो पांव रे-----
जाई नगर के लोग लुगाई ------
धरेंगे नांव तो धरैं नांव रे
मेरी----

सासु लड़ै या ननदिया लडै,
मोसैं रुस क्यों न जाए सबै गांव रे
तू मत रूसै अरे मेरे प्यारे ------
मैं बैठी रहूंगी तेरी छांव रे
मेरी---
अपनी मौज तेरे संग चलूंगी-2
मैं पल्ला पकरि सौ-सौ दांव रे
ओ श्याम सुंदर मोहे न बिसरियो
मैं तेरी कहाइ कहाँ जाओं रे.
मेरी -----

3) होरी खेलन आए हौ तो खेलो भला,
गारी न देओ जसुदा के लला.
गारी देओगे गारी खाओगे,
एक की लाख सुनौगे भला
गारी----
जो तुम चाहो भलाई कन्हाई,
अपनी डगर चले जाओ भला
गारी न देओ---
नंद जशोदा सहित बिकैहौ,
जो गिर जाए मेरे कर को छला,
गारी न देओ ---

धुलैंडी के दिन होली के रंगों के साथ मोती नगर में महेश भाई साहब, दिलीप की टोली और इंदिरा नगर में अखिलेश भाई साहब की टोली के नेतृत्व में बसंत जी - आशा जी के यहां गत कई वर्षों से गम्मद हो रही हैं। इसके अतिरिक्त हम मथुरियों की गौरवमयी संस्था श्री माथुर चतुर्वेदी मंडल, लखनऊ के तत्वावधान में विगत कई वर्षों से भव्य समारोह के रुप में प्रति वर्ष होली मिलन मनाए जाने का इतिहास हैं। जिसमें समाज के प्रतिष्ठित गायक किशोर, देवेश, यतींद्र, चूंचू एवं उदीयमान युवा तन्मय की प्रस्तुतियां उल्लेखनीय हैं।

इस बार होली के गुलाल का पहिला टीका लखनऊ का गौरव भाई यतीश 'राज' को,जो इस बार होरी की गम्मदों में हमारे साथ न होंगे। होरी की इन गम्मदों की शान रहे भाई विजय 'वकील', रवींद्रनाथ जी, दिलीपजी (आशियाना), सतीशजी, मुनीश जी, राकेशजी, तपेश जैसे महान व्यक्तित्वों को याद किए बिना लखनऊ की होरी की इन गम्मदों का जिक्र अधूरा रहेगा।

हजारों महफिलें होंगी हजारों कारवां होंगे,
निगाहें तुमको ढूँढेंगीं न जाने तुम कहाँ होगें.
अथवा विजय वकील के शब्दों में-
होरी आई सब मिलेंगे अपने-अपने यार से
हम गले मिल-मिल के रोएंगे दरो-दीवार से

गम्मद के अंत में ₹ढप बाजै री छैल मतवारे को ढप बाजै री₹ के साथ होरी की यह संध्या सम्पन्न हो जाती है। और शुरू हो जाता है फिर अगले रविवार को नई गम्मद का इंतजार,जिसके स्थान की घोषणा इस गम्मद में ही हो जाती है.तभी तो-

लखनऊ हम पर फ़िदा है,
हम फिदाए लखनऊ

सूचना

बंधुवर
सादर पालागन,

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की आगामी बैठक ग्राम होलीपुरा जिला आगरा में 3 अप्रैल 2021 को प्रातः 10 बजे से आयोजित की जाएगी। बैठक में पधार कर समाजहित में योगदान देकर अनुग्रहित करें।

आप सभी आमंत्रित सदस्यों से आग्रह है कि अपने आगमन की पूर्व सूचना आवश्यक रूप से भेजने की कृपा करें।जैसा कि सर्वविदित है कि ग्राम में बैठक के आयोजन के लिए सारी व्यवस्थाएँ बाहर से संसाधन जुटाकर ही करनी होती है। अतः अपने आगमन की पूर्व सूचना प्रेषित अवश्य करें। जिससे आपके आवास आदि की यथोचित व्यवस्था की जा सके।

सहायता व व्यवस्था संबंधित जानकारी हेतु निम्न बाँधवों से संपर्क किया जा सकता है।

संपर्क :: श्री धीरेन्द्र नाथ चतुर्वेदी (9005571744), श्री अशोक चतुर्वेदी (9711687405), श्री नवीन चतुर्वेदी (9557711836), श्री करूणेश चतुर्वेदी (7974271812), श्री बिपिन पांडे (9971120464)

निवेदक
मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी, मंत्री
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा, 9871170559

सिन्दरपुरिया होली व्यार....

- दिलीप सिकंदरपुरिया, लखनऊ

बसंत पंचमी के आते ही पावन पवन की राहें बदल जाती हैं,पवन में मादकता छा जाती है और बसंत व्यार के साथ ही वातावरण में उल्लास का अहसास होने लगता है, सरसों के पीले फूल की तरुणाई के साथ ही गांव के स्कूल में सरस्वती पूजा का आयोजन के साथ ही ब्रज की चौपालों पर ढोल नगाड़ों की थाप पर धूम मचाने वाली होली गायन शुरू हो जाता है----

नेह लग्यौ मेरौ श्याम सुंदर सौ।आयौ बसंत सबइ बन फूले,खेतन फूली है सरसों।।

इसके साथ ही रोज किसी न किसी चौबारे पर होली गायन की धूम मचती है, महाशिवरात्रि के आते आते भंग की तरंग में सारा माहौल धतूरे जैसा नशीला हो जाता है----

ए महादेव ए भोला, सदाशिव ए भोला। बंगला छबाय देउं पाननि कौ।।अंक धतूरे के बाग लगाये।लक्ष लुटाए कियौ घर चौरा।।सेरूक भांग बिखेर दी है।झींकत जाति बटोरते ए गौरा।। ए महादेव ए भोला, सदाशिव ए भोला.....

होली का त्यौहार आते आते वातावरण नशीला होने के साथ ही रंगीला हो जाता है----सिकन्दरपुर में भी होली की मस्ती के साथ ही महिलाओं-पुरुषो की अपनी अपनी तैयारियों की खुमारी छाने लगती हैं। होली के दिन गांव में सुबह सबसे पहले महिलाएं सज धज कर होली पूजन करने जाती हैं,जब महिलाएं पूजा करके लौट आती हैं,तब पुरुष लोग अच्छे कपड़े पहन कर होलिका दहन एवं पूजन करने के बाद एक दूसरे के घर होली मिलन के लिए जाते हैं, उसके बाद कपड़े बदल कर होली का रंग एवं गुलाल उड़ाते हुए चौबारे पर होली गायन का रंग भी जमता है, प्रायः गाई जाने वाली होलियां

1...

पालागौ कर जोरी,श्याम मोसों खेलौ न होरी।।गउएं चरावन क्यों हम शिक्षकों,सासु ननद की चोरी।सिगरी चुनरि मोरी रंग में न बोरो एती अरज सुनो मोरी।छीनि झपटि मोरे हाथ हों गागरि,जोर हो बहियां मरोरी।जिय धड़कन मोरी सांस चलति है,देह कंपै गोरी गोरी।

पालागौ कर जोरी.....!

अबीर गुलाल लपटि रहयौं मुखसौं,सारी रंग में बोरी।सासु हजारन गाली देयगी,बलमा जियत न छोरी।फाग खेलिकै तुम मनमोहन,का गति कीन्ही मोरी।सखियन बिच बाबा नंद के दूआरे,होयगी मोरी तोरी।।

पालागौं कर जोरी.....!

2....

मथुरा की कुंज गलिन में होरी खेल रहे नंदलाल।पूरब में राधा प्यारी, पश्चिम में कृष्णमुरारी, उत्तर दक्षिण गोपी ग्वाल।। मथुरा की कुंज गलिन में.....!

उन भरि पिचकारी मारी,नई सारी सुघर बिगारी,मुख मल दियौ अबीर-गुलाल।

मथुरा की कुंज गलिन में.....!

3.....

सांबलिया तू बेगि खबर लीजै मोरी,मैं तो शरणागत हरि तेरी ।। बाप कहै बेटी ब्याहूं ध्दूरिका, भैया कहे चंदेरी। जौ शिशुपाल मौर धरि एहै,जरि बरि हैं जाऊं ढेरी।

सांवलिया तू बेगि.....!

सिंह शिकार स्यार लियै जावै, चहुं दिसि असुरन घेरी।,जरासंध शिशुपाल हु ऐहै,जायगी लाज हरि तेरी।

सांबलिया तू बेगि....!

रुकमनी जी ने पाती भेजी,विप्र के हाथ सबेरी।पाती बांचि विलम्ब न करियौ,दीजो संदेसौ बहौरी।

सांबलिया तू बेगि.....!कुण्डलपुर में देवी अंबिका,पूजन जेहों सबेरी।यहां चलि अइयो कृष्णकन्हैया, जन्म जनम की चेरी। सांबलिया तू बेगि.....!

भइया दूज का टीका करने के बाद चैत अष्टमी तक होली गायन की धमाल मचाया जाता है। अष्टमी को मेला लगने के साथ देवी मंदिर पर बासोरा खाने के साथ ही होली गायन की धमाचौकड़ी के बाद ही होलिका उत्सव का समापन हो जाता है।

मैनपुरी में होली गायन

- अम्बर पाण्डेय, मैनपुरी/भोपाल

सम्पूर्ण श्री माथुर चतुर्वेदी समाज होली के त्यौहार को बड़ी ही मस्ती में मनाता है। मैनपुरी का समाज कोई अपवाद नहीं है। 'होरी में नित नई धूम मचै' मैनपुरी में। हमारे समाज में होलीगायन का विशेष महत्व है। हर स्थान की अपनी-अपनी विशेषता है। मैनपुरी की अपनी ही विशेषता है। यहाँ की होलियों में साहित्यिक और आध्यात्मिक पुट भी मिलता है। ये होलियाँ अधिकतर राग काफी में होती हैं पर अन्य रागों से कोई परहेज नहीं है। रसिया आदि का भी भरपूर आनन्द लिया जाता है। रस की यह फुहार बसन्त पंचमी से झरने लगती है और होली की परवा आते-आते झमाझम बरसने लगती है। होली गायन मन्दिरों मे नियमित होने की परंपरा आज भी संरक्षित है जहाँ बुजुर्गों के संरक्षण मे बच्चे भी पारंगत हो जाते है। इसके अतिरिक्त नित्यप्रति किसी न किसी रसिक के निमन्त्रण पर उसके निवास पर रंग-रस की झड़ी लगती ही रहती है। होली गायन का यह नशा दिन-प्रति-दिन बढ़ता ही जाता है और आनन्द की वृद्धि दिन दूनी रात चौगुनी होती जाती है।

इस परम्परा के पुराने संवाहकों में जो महत्वपूर्ण नाम हैं उनमें स्वनामधन्य चम्पा लाल पाण्डेय(मेरे बड़े बाबा), त्रिभुवन दास (मुनमुनियाँ चाचा), बिहारी लाल (बिहारी बाबा), जुगल किशोर (जुगले चाचा घी वाले), टीकाराम जी (टीके दद्दा) नवल किशोर (बिटऊ चाचा), प्रमुख हैं। इनसे पूर्व के गयकों का मुझे स्मरण नहीं है। अतः उनका उल्लेख न कर पाने के लिए क्षमा चाहता हूँ। इनके बाद स्व ब्रजेन्द्र नाथ (लालू बाबा) स्व सुरेश दादा, स्व प्रकाश चन्द्र और स्व सुबोध चन्द्र (बिटुआ चाचा), स्व उपेंद्र नाथ (छुन्नौ चाचा), स्व मुरली भाईसाहब ने गद्दी सम्हाली। स्व भूपेन्द्र चाचा का तबले पर

सहयोग अद्भुत था। वर्तमान समय में इस परम्परा को गति प्रदान करने वालों में सर्वश्री हर स्वरूप पाण्डेय (हरेश चाचा), उमेश चन्द्र चतुर्वेदी (दादा) ब्रजेन्द्र नाथ (बिज्जेभाई सा), महेन्द्र (छप्पर वाले), धर्मेश, शिशिर'करुणेश', मनोज दवाई वाले, बिनय सोती (अभी करोना काल में ही निधन हुआ है) प्रमुख है। नई पीढ़ी मे भी होली गायन का उत्साह संतोषप्रद है। स्वर्गीय चम्पा लाल पाण्डेय जी की गाई हुई होलियों में से कुछ यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ। ऐसा नहीं है कि इनके गायन पर उनका एकाधिकार था। उपस्थित समाज में से कोई भी किसी भी होली को उठा सकता था जिसके गायन में पूरा समूह साथ देता था। यह परम्परा आज भी कायम है।

-- होलियाँ --

1- होरी हो ब्रजराज दुलारे।

अब काहे जाय छिपे जननी ढिंग रे द्वै बापन बारे।

कै तौ निकसिकैं होरी खेलौ कै मुखसौं कहौ हारे, जोरि कर आगैं हमारे।। होरी हो।।

बहुत दिनन सौं तुम मनमोहन फागहि फाग पुकारे।

अबकी देखहु सैल फाग की, पिचकारिन के फुहारे चलैं जहँ कुमकुम न्यारे ।। होरी हो।।

बहुत अनीति उठाई है तुमने रोकत गैल गिलारे।

नारायण अब जान परैगी,आवौगे द्वारें हमारे, दरस अपना दिखला रे।। होरी हो।।

2- डगर मेरी छाँड़ौ श्याम बिंध जवौगे नैनन में।। डगर।।

भूल जाउगे सब चतुराई , हौं मारौगी सैनन में।। डगर।।

जौ तेरे मन में होरी खिलन की तौ लैचल कुंजन में।। डगर।।

चोया चन्दन अतर अरगजा छिरकौंगी फागुन में।। डगर।।

चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि लागी है तन-मन में।। डगर।।

3- फाग खेलन कौं मेरौ जिय चाहै मैं ब्रज की कुंजन में जाउँगी।। फाग।।

रंग में रंगौगी उनकौ पीताम्बर सुरंग चुनरिया उढ़ाउँगी।। फाग।।

जौ तुम भए हौ खिलाड़ी होरी के गलवा तोहि लगाउँगी।। फाग।।

उमगि मिलौंगी आनंदघन सौं, ख्याल खुशाल मनाउँगी।। फाग।।

4- कासौं कहौं मैं जिय कौ हाल मोहि कीन्ही संवरिया नै बावरी।।कासौं।।

इक बिरहा दूजै लाज गुरुजन की तीजै मिलन की है चाव री।कासौं।।

बिरह कौ सागर सूखत नाहीं, भई हौं भँवरवा की नाव री।। कासौं।।

गावै गूदड़ उर बसहु बिहारी मोहि छवि लागत है रावरी।। कासौं।।

5- गारी न देउ जसुदा के लला, होरी खेलन आए तौ खेलौ भला।। गारी।।

गारी देउगे गारी खाउगे, एक की लाख कहौंगी भला।। गारी।।

नन्द जसोदा सहित बिकैहौ जौ गिरिहै मेरे कर कौ छला।। गारी।।

बृन्दावन की कुंज गलिन में दधि कौ दान न पैहौ भला।। गारी।।

जौ तुम चाहौ भलाई कन्हाई सीधी गैल चले जाओ भला।। गारी।।

6- पौरि बृषभान की आज रंग झर बरसै री।। पौरि।।

उड़त गुलाल लाल भए बादर, अति रंग सरसै री।। पौरि।।

खेलत दामिनि घन सुन्दरि कृष्ण रसिक संगै री।। पौरि।।

हीरासखी फागुन के महीना में सावन सरसै री।। पौरि।।

7- नैहर में दाग लगौ चुनरी।। नैहर में।।

ओढ़ि चुनरिया चली मायकें, लोग कहैं धन कहाँ फहुरी।। नैहर में।।

ना कहुँ भेंट भई रंगरिजवा, ना मिलौ धुबिया करै उजरी।। नैहर में।।

हाट लगी है सौदा करलेहु मंहगा है साबुन या नगरी।। नैहर में।।

कहत कबीर सुनौ भाई साधौ, बिन सतसंग न होइ उजरी।। नैहर में।।

8- जाकाहू कौं मिलै स्याम, कहिदीजो हमारी राम राम।। जाकाहू।।

नगर नगर और द्वारे द्वारे होरी खेलन की धूम-धाम रे।। जाकाहू।।

भूषन-बसन रधिका ने त्यागे ध्यान तुम्हारौ ही आठौ याम रे।। जाकाहू।।

कृष्णानंद अरज इतनी है क्यों छांड़ी ऐसी बाम रे।। जाकाहू।।

9- मानौ या न मानौ मेरी सुनौ या न सुनौ

मैं तौ तोही कौ न छाँड़ौगी अरे साँवरे।। मानौ।।

यामें लाज सरम की कहा बात रे

जब प्रेम के पंथ दियौ पाँव रे।। मानौ।।

याही नगर के लोग लुगाई धरैंगे नाम तौ धरैं नाम रे।

सासु लड़ै या ननदिया लड़ै मोसौं रूठ क्यों न जाय सभी गाँव रे।

तू मत रूठै अरे मेरे प्यारे मैं बैठी रहौंगी तेरी छाँव रे।। मानौ।।

अपनी मौज तेरे संग चलौंगी पल्ला पकरि सौ-सौ दाँव रे।। मानौ।।

अहो स्याम सुन्दर मोहि बतावौ मैं तेरी कहाय कहाँ जाउँ रे।। मानौ।।

10- कर लियें अबीर-गुलाल साँवरौ खेलत होरी।। कर लियें।।

कृष्ण गह्यौ ललिता कौ नीलाम्बर उनहूँ पीताम्बर गह्यौ है बहोरी।

छूटी अलक मुकट लपिटानी मानौ व्यालिनी ने चन्द्र ग्रस्यौ री।। कर लियें।।

केसर कुमकुम रंग लै मिलि सब बसन सुरंग रंगौ री।

पकरि नचावन चहति गुपालहि तौ लेहु बैन बृषभान किशोरी।। कर लियें।।

बाजत ताल मृदंग झाँझ ढफ और सखी धुनि ढोल टंकोरी।

गावत चलीं है विवाह ललित सुर शिव बिरंच सनकादि सखी री।। कर लियें।।

मदन मयंक दिवाकर लज्जित और कवी को बरन सकौ री।

गावत सुनत चार फल पावत लखि हरि पद द्विज सूर तरौ री।। कर लियें।।

11- आज श्याम सों मैं बैर करूँगी।।आज।।

कोई कारी वस्तु जगत की कबहूँ ना बिलसूँगी।।

कोयल कूक हूक मुरवन की श्रवनन नाहिं सुनूँगी, भ्रमर के पर नौचूँगी।। आज।।

कारी घटा की छटा कौं अटा चढ़ि कबहूँ ना निरखूँगी।

गगन दृगन सौं ओट करूँगी, चन्द्र कलंक हरूँगी, रात में पग न धरूँगी।। आज।।

दाँतन मिस्सी कबहु न लगैहौं, अँखियन कजरा न दूँगी।

कालिन्दी में पग नहिं बोरूँ, मृगमद अंग न धरूँगी, नील पट धोइ धरूँगी।। आज।।

कालदेव कलीमाता का पूजन अब न करूँगी।

सिद्धि के हेतु बिरह में सजनी काग सगुन ना लूँगी, केश निज नौच धरूँगी।। आज।।

दीपक बारि बैठ अंगना में रैन कौ तिमिर हरूँगी।

दर्पण माँहि देखि अंखियन कौं पुतली काढ़ि धरूँगी,जनमभर अंधरी रहूँगी।। आज।।

12- सुनिआई री आज नई होरी की भनक,

रंग डारूँगी वाहीपै जानें तोरौ है धनुष।।सुनि ।।

करि श्रृंगार चलीं ब्रजबनिता कोऊ अबीर कोऊ अरगजा मलत।

खेलत राम जानकी के संग, उतसौं आवत पिचकारी की सनक।। सुनि।।

एक कहै रंग डारौ लखन पै ,एक कहै या खिलाड़ी पै तनक।

एक उमगि मुख मलत लाल कौ, एक हँसत दै-दै तारी की ठनक।। सुनि ।।

जो आनन्द भयौ मिथिलापुर शेष सारदा बरन न सकत।

तुलसीदास धन धन राजा दसरथ धन्य धन्य मिथिलेश जनक।। सुनि।।

13-- नैनन में पिचकारी दई मोहि गारी दई , होरी खेली न जाय।।नैनन में।।

ऐ रे लंगर लंगराई मोसौं कीन्ही, केसर कींच कपोलन दीन्ही।

लै गुलाल ठाढ़ौ मृदु मुसकाय, होरी खेली न जाय।।नैनन में।।

औचक आनि कुमकुमा मारै, रंग सुरंग सीस पर डारै ,

यह ऊधम सुनि ननद रिसाय, होरी खेली न जाय।। नैनन में।।

नैक न कानि करत काहूकी, दृष्टि बचावत बलदाऊ की,

पनघटसौं घरलौं बतलाया, होरी खेली न जाय।।नैनन में।।

होरी के दिनन मोसौं दूनौ दूनौ अटकै, सालिगराम कौन जाय हटकै, अंग लिपट हँसि हा हा जाय, होरी खेली न जाय।। नैनन में।।

--- रसिया ---

14 - रसिया कौं नारि बनावौ री।। रसिया कौं।।

कटि लंहगा गलमांहि कंचुकी सिरसौं चुनरि उढ़ावौ री।। रसिया कौं।।

हाथन मेंहदी पाँव महावर नख बेसर पहिरावौ री।। रसिया कौं।।

नारायण तारी बजाइकैं जसुमति निकट नचावौ री।। रसिया कौं।।

15- कबसैं तू छैल बनौ रसिया।। कबसैं।।

बन- बन धेनु चरावत डोलै, अरे जाके हाथ लकुट अरु कटि कछिया।। कबसैं।।

कुलचैगी कोउ गाल गुलगुले, अरे जाके लाल-लाल औरज किसमिसिया।। कबसैं।।

नारायण प्रभु मोरे बाप की आछी प्रगटी तू बस जसिया।। कबसैं।।

राधिका जी की सगाई

- सुनीत चतुर्वेदी, कटनी

एक दिन कुअर नंद घर सहजहि खेलन आई
ऐजी कियो मनोरथ कर नंद रानी हित कर बोल पठाई
ऐजी कीरथ कहे कहा तू कन्या कहा सबरो दिन बीतो
किन पहनाए हार नौ लखे किन फूलेल सर गूथो
एक दिन कुअर नंद.....

ऐजी रुपरंग देख यशोमत मन भाई
यशोमत मन में यो कही देख रुप की रास
ये तो कुअर मेरो लाल की मन मोहन पूजवाए मेरी आस कि
जोड़ी मोहनी राधे वर नंद किशोर कि जोड़ी मन मोहनी
ऐजी अटा अटारी झाकि झरोका इत ऊत लौ वहलाई
ऐजी नीठ-नीठ कँसऊ कर-कर के तब घर कै पहुचाई
ऐजी यशोमत सखियन सौ कही वरसाने तुम जाओं
राधे जी की माँए को दे कै संदेशों आओ, कि जोड़ी मोहनी ...
ऐजी तुम घर सुता - सुजान साल हमरो अति निको कृपा करके करहु लाल हमरे के टीको बहुत भाति सुख पाए हैं हम तुम हुए हैं और नहीं कछु चाहिए सो राही जगत की रीति कि जोड़ी मोहिनी राधे....

सखि जो उठकर चली छिनक गोकुल में आई
जहा यशोदा माँए बैठके बात चलाई
वह बालक महा लगुरा दद माखन को चोर
बात कहत लाजौ नहीं वह कहे और की और
की जोड़ी मोहनी.....

मैं पठही वृषभान के लेन सगाई तोर उनमाँ मोते उत्तर दियो सो तेरी चिंता मोरा कि जोड़ी मोहिनी.....

मोर मुकुट माघे धरो कृष्ण रहे मुस्कुराए, वरसाने के महल में मनमोहन पहुचे जाए कि जोड़ी मोहनी.....

देखत छवि वृषभान में फूलन गूघी माल
कृष्ण राधा के गले में करजोर कें डाली माल
कि जोड़ी मोहनी.....

फाग उत्सव

- भरत चंद्र चतुर्वेदी, भोपाल

होली का पावन पर्व हर्ष एवं उल्लास के साथ ही अपनी पहचान व सांस्कृतिक परंपराओं का महोत्सव है। इस दिन छोटे बड़े ऊँच-नीच का भेद नहीं रहता है। सब एक दूसरे से गले मिलकर अपने शिकवा शिकायत को भूल जाते हैं। संपूर्ण देश में यह पर्व बड़े हर्ष एवं उत्साह के साथ मनाया जाता है। परंतु ब्रज क्षेत्र का यह विशेष पर्व है। संपूर्ण बृज क्षेत्र में कृष्ण जन्माष्टमी तथा होली के पर्व विशेष रूप से आयोजित होते हैं। बृज की लठमार होली देखने विदेशों से भी नागरिक आते हैं। हमारे यहाँ होली के अवसर पर फाग, दीपचंदी, पीलू, बिहाग, कलिंगड़ा, ठड़उआ, धमार, काफी, चाल, लाचारी, राजपूती, रसिया, जकड़ी, लेद आदि शास्त्रीय संगीत के माध्यम से होली गायी जाती है। हमारे समाज में जिस घर में किसी व्यक्ति का स्वर्गवास हो जाता है। उस घर के दरवाजे पर देवी गीत गाये जाते हैं। माथुर चतुर्वेदी समाज में होली गायन की एक समृद्ध परंपरा है।

औद्योगीकरण का प्रभाव हमारे समाज पर भी पड़ा है। जिसकी वजह से दस – बारह नगरों एवं चालीस गांव में सिमटा हमारा समाज संपूर्ण देश के हिस्से में अपनी उपस्थिति का अहसास करा रहा है। परंतु हम बिखर रहे हैं इसी का परिणाम है हमारे समाज की होली गायन की समृद्ध परंपरा भी सिमटकर कुछ एक क्षेत्रों तक सीमित हो गयी है। हमारी इस सांस्कृतिक धरोहर को पुर्नजीवित करने हेतु अथवा इसे बचाये रखने हेतु हम भोपाल वासियों ने रंग पंचमी के अवसर पर प्रतिवर्ष फाग महोत्सव के कार्यक्रम को विगत साठ वर्षों से भोपाल में आयोजित कर रहे है। पूर्व में स्व. सेवाराम जी, स्व. दयानंद जी, स्व. रजनीकांत, स्व. तेजेन्द्र कुमार, स्व. प्रकाश चंद्र जी (पाइपुरी) तथा वर्तमान में मैं स्वयं तथा सर्वश्री रामचन्द्र (डव्वली), भरत (चन्द्रपुर), सुरेंद्र, राजेश, बृजेश, शशांक व तरूण, श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी, श्रीमती चित्रा, श्रीमती रश्मि, श्रीमती पदम रेखा, श्रीमती सीमा व श्रीमती सुनीता आदि का होली गायन में सहयोग रहता है।

भदावर में हमारे चतुर्वेदियों के गाँवो में यह पर्व बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है। सभी गांवों में बाहर से बड़ी संख्या में सपरिवार चतुर्वेदी एकत्र होते हैं (लगभग एक हजार)। सामूहिक रूप से होली गायन का आनंद लेते हैं। भोजन भी सामूहिक रूप से होता है। पूरनमासी को ग्राम-पुराकन्हैरा में सभी गांव के लोग एकत्र होकर होलियां गाकर आनंद लेते हैं तथा रात्रि के भोजन के पश्चात कार्यक्रम होता है। परवा को सभी लोग अपने-अपने गांव में रंग खेलकर उत्सव मनाते हैं। दौज को होलीपुरा ग्राम में तथा तीज को तालगांव में सामूहिक रूप से होली गायन कार्यक्रम होता है व गायन के पश्चात भोजन भी सामूहिक होता है। हमारे गांव पुराकन्हैरा में यह कार्यक्रम चालीस वर्षों से निरंतर चल रहा है। प्रत्येक वर्ष गांव आने वालों की संख्या बढ़ रही है। चौथ को कार्यक्रम समाप्त हो जाता है तथा अगले वर्ष पुनः मिलने की उम्मीद के साथ गाँव के कार्यक्रमों की स्मृति लेकर चले जाते हैं। समाज में प्रचलित मुख्य निम्न होलियों के साथ उनकी रागों के नाम भी

आपकी सहूलियत के लिए दिए गए है।

(काफी)

आजु श्याम के मैं अंक लगौगी, कलंक लगै तौ भलें ही लगौरी।।
जरि बरि जाय कानि कुल की सब, जाल निगोड़ी भगौ तो भगौ री।।
सुनियो री मेरी पार-परौसिन, तुम उपहास करौ तो करौ री।।
दयासखी मैं होरी खेलौंगी, तोप दगौ तो भलें ही दगौ री।।

(काफी)

होरी हो ब्रज राज दुलारे।।
बहुत दिनन सें तुम मनमोहन, फाग ही फाग पुकारे।।
आज देखियो सैर फाग की, पिचकारिन के फुहारे।।
चलें जहाँ कुमकुम न्यारे।।
अब क्यों जाय छिपे जननी ढिंग, ओ द्वै बापनि वारे।
कै तौ निकसि कें होरी खैलौ, कै मुख सों कहौ हारे,
जोरि कर आगें हमारे।।
निपट अनीति उठाई है मोहन, रोकत गैल गलारे।
'नारायण' तब जानि परैगी, आवौगे द्वारें हमारे,
दरस हमकों दिखला रे।।

(विहाग)

है गए श्याम दौज के चन्दा।।
मधुबन जाइ बने मधुबनियाँ, कुबजा डारो प्रेम को फन्दा।।
गोकुल सें सब प्रेम बिसारौ, छोड़े बिलखत जसुमति नन्दा।।
''मीरा'' के प्रभु गिरधर नागर, पहलौ प्रेम परौ अब मन्दा।।

(चाल)

ननदी अब का चढ़ऊँ अटरियाँ, बिराने है गये सईयाँ।।
और दिना मोसै मुख हू न बोले, आज गही मोरी बहियाँ।।
कौन जतन अपमान बचइहौ, परत तुम्हारे पइयाँ।।
बात गए फिर बात मिलै ना, रखियो लाज गुसईयाँ।।

(चलती)

आजु मची श्याम रंग होरी,
संग नवल राधिका गोरी।।
करन कनक पिचकारिन भरत आवै,
धावत आवत रंग डारत सबन पर।
अबीर गुलाल मुख मलत चलत,
ऐसी चपल चाल चित चोरी।।
'कृष्णानंद' हरखि निरखि सुर नर मुनि,
अमर सिहात लखि गोपिन को अनुराग।
सुरपति सारदा सराहत सुहाग भाग,
यह ब्रज सुबस बसौरी।।

(रसिया)

रसिया कों नारि बनाओं री।।
कटि लँहगा गल माँहि कंचुकी, सिर सों चुनरि उढ़ाऔ री।।
हाथन मेंहदी पाँव महावर, नकबेसरि पहनाऔ री।।
नैनन कजरा सिर पर गजरा, पायलिया पहनाओरी।।
'नारायण प्रभु' तारी बजाय कें, जसुमति निकट नचाऔ री।।

(रसिया)

छाँड़ौ छाँड़ौ श्याम मेरी बहियाँ, मैं परति तिहारे पैयाँ।।
तुम चंचल चपल गिरधारी, ब्रज रसिया अजब खिलाड़ी।।
हम अबला निपट अनारी, मेरी बारी उमरि लरिकैयाँ।।
मुसिक्याय प्रेम बस कीन्हों, मेरी नस नस को रस लीन्हो।।
पर हित बस गोरस छीनौ, सखी या ब्रज में नहि जैयाँ।।
मेरी तासे की अँगिया फारी, सारी सब टूक टूक करि डारी।।
कहाँ आनि फँसी दई मारी, यही बार बार पछितैयाँ।।

(ठड़उआ)

अरे हाँ यार, जाइ लै दै झमियाँ।
जाइ लै दै झमियाँ, झमियन पै मन लागि रहौ।।
अरे हाँ यार, जाकी गोरी गोरी बहियाँ हरी हरी चुड़ियाँ।।
आगे अँगरिया, पाछें पछिलियाँ,
बिच बँगलियाँ, दसौ अगुरियाँ,
मुदरी सोहै, बाजूबंद गाढ़े।। यार जाहि .....
अरे हाँ यार, अतलस कौं लहँगा।
अतलस कौ लहँगा, घूम घुमारौ,
लगी किनारी, ऊपर साड़ी, दस गज कौ, डंडिया।।
यार जाहि .....
जाइ यार बुलावै, का फ़रमावै, अरे हाँ यार जाई यार बुलावै
पान खबावै, पीक डराये, लौंगन का हरया।।
जाय बाग तमासें, जाय बाग तमासें सोरह निब्बू,
परसै शिम्भू, और कदम छइयाँ।।

(रसिया)

नैंननि में पिचकारी दई, मोहि गारी दई, होरी खेली न जाय।।
तेरे लंगर लंगराई मों सों कीन्ही, केसरि कींच कपोलनि दीन्हीं, लै गुलाल ठाढ़ौ-ठाढ़ौ मुसिकाय।।
नैंक न कानि करत काहू की, आँखि बचावत बलदाऊ की,
पनघट सों घर लों बतराय।।
औचक कुचनि कुमकुमा मारै, रंग सुरंग सीस पै डारै,
अंग लपटि हंसि हा हा खाय
होरी के दिनन मों सों दूनों दूनों अटकै, 'सालिगराम' कौन जाय हटकै, यह ऊधम सुनि सासु रिसाय।।

(रसिया)

तेरौ छैला गुपाल, नैननि में तकि मारै गुलाल।।
गोकुल गलियन धूम मचावै, आपु नचै और मोहि नचावै, तारी बजाय सब आय गये ग्वाल।।
कर सोहे कंचन पिचकारी, मरि मरि सो मेरी छतियन मारी,
देखत है मेरो रूप लुभाय।।

रपटि परी हों केशरि कींचें, बे भये ऊपर हों भयी नीचें,
या ऊधम कौ कौन हवाल।। तेरौ छैला गुपाल .....

(रसिया)

आज बिरज में होरी रे रसिया, होरी रे रसिया बरजोरी रे रसिया।।
कौन के हाथ कनक पिचकारी, कौन के हाथ कमोरी रे रसिया।।
कृष्ण के हाथ कनक पिचकारी, राधा के हाथ कमोरी रे रसिया।।
अपने री अपने घर से निकली, कोई श्यामल कोई गोरी रे रसिया।।
उड़त गुलाल लाल भये बादर, केसर रंग में घोरी रे रसिया।।
बाजत ताल मृदंग झांझ ढफ, और नगारे की जोड़ी रे रसिया।।
कै मन लाल गुलाल मँगायो, कै मन केसर घोरी रे रसिया।।
सौ मन लाल गुलाल मँगायो, दस मन केसर घोरी रे रसिया।।
'चन्द्रसखी' भजु बालकृष्ण छबि, जुग-जुग जिओ यह जोड़ी रे रसिया।।

(रसिया)

मृगनैनी तेरौ यार नवल रसिया।।
बड़ी-बड़ी अंखियां नैंनन कजरा, तेरी टेढ़ी चितवन मन बसिया।।
अतलस को याको लहँगा सोहै, झिलमिल सारी मेरे मन बसिया।।
छोटी से अंगुरिन मुँदरी सोहै, याके बीच आरसी मन बसिया।।
बांह-बरा बाजूबंद सोहै, याके हियरें हार दिपत छतियां।।
रंग महल में सेज बिछाई, याको लाल पलंग पचरंग तकिया।।
'पुरूषोत्तम प्रभु' देख विवस भये, सबै छाँड़ ब्रिज में बसिया।।

(दीपचंदी)

लागे नेहा जनावना हो जसुदा के नैंना।।
हमसो नेह गेह काहू आनि सों, हमसों लागे दुरावना।।
बीती रैनि पिया नहिं आये, अंचल लागे उड़ावना।।
पान की पीक लीक अंजन की, अधरन अधिक सुहावना।
बिनु गुन बाल बाल बिन बेसरि, बाल लगे सुरझावना।।

(विहाग)

सजन तोहि मुख देखे की प्रीत।।
तुम अपने यौवन मदमाते, कठिन विरह की रीत।।
जहाँ जाउ तहँ हँसि बोलत, गावत रस के गीत।।
हरीचन्द मधुवन के भौंरा, हौ मतलब के मीत।।

(रसिया)

बटेसुर होरी खेलन आये हैं शिव पारवती के संग।
राजा भदावर ने तप कीनहों, नारी सौ पुरूष बनाये हैं।
पाठक जू नै रंग चुरायौ, शंकर रंगनि सौ हनवाये हैं।
भंग छानि शिव चालन लागे, तब कुंजन वास बनाये हैं।
विश्रान्ति बनाइ दई जमुना तट, पुनि सुन्दर घाट बनाये हैं।
उत्तर बहति जान्हवी त्यागी, जमुना पश्चिम ओर कराई हैं।
बटेसुर होरी .....

(पीलू)

गारी न देउ जसुदा के लला, होरी खेलन आए हौ तौ खैलौ भला।।
गारी देउगे गारी खाउगे, एक की लाख सुनौगे भला।।
नंद जसोदा सहित बिकैही, जो गिरि जाय मेरे कर कौ छला।।
बृन्दावन की कुंज गलिन में, दधि की दान न पै हौ भला।।
जो तुम चाहौ भलाई कन्हाई, अपनी डगर चले जाउ भला।।

(पीलू)

ऐसौ चटक रंग डारौ कन्हैया, मोरी चुनरी में परि गयो दाग री।।
ग्वाल बाल मोहि चहुं दिसि घेरैं, केहि मग जाऊँ मैं भाग री।।
अबीर गुलाल लियें भरि झोरी, हम सों मचायौ है फाग री।।
'भूधरदास' श्याम मिलि जैहैं, हरि के चरन चित लाग री।।

(पेंड़ा)

बालम बेसरिया को लटकन, छैला टोरि डारौ रे।।
लटकन टोरी गूँज मरोरी, जा सुनरा के छोरा।।
यह लटकन मेरी मात निसानी, मलिन कियौ मन मोरा।।

(काफी)

ऐसौ ध्यान धरौ री, श्याम सों खेलें होरीं।।
ग्यान कौ रंग सुरति पिचकारी, नेह गुलाल मलौ री।
द्वै मत सों पिया हाथ न ऐहैं, एकहि ध्यान धरौ री,
बहुरि मुख अबीर मलौ री।।

(काफी)

नाथ मेरा क्या बिगड़ेगा, जायगी लाज तुम्हारी।।
तुम तौ दीनानाथ कहावत, मैं अति दीन दुखारी।
जैसें जल बिनु मीन मरति है, सोई गति भई है हमारी।।
भूमि-विहीन पांडु-सुत डोलें, धरणि धरम-सुत हारी।
रही न पैज प्रबल पारथ की, भीम गदा महि डारी।।
सूर-समूह सब मिलि बैठे, बड़े बड़े व्रत-धारी।
भीषम करण द्रोण द ुःशासन, जिन मेरी अपति विचारी।।
मो पति पाँच पाँच के तुम पति, सो पति कहाँ बिसारी।
'सूर' स्याम पीछें पछितैहौ, जब मोहि देखौ उधारी।

लेद

मेरी दौरनिया, मेरी बैरनिया, मेरो मनु लगों अटरिया-2
ऐ हाँ, मेरो मनु लगों अटरिया.....2
सात डणा की धरी नसैनी... हाँ-हाँ-हाँ - अब हो-हो..
तापे चढ़ गियो छैला-छैला-छैला
मेरी दौरनिया, मेरी बैरनिया.....

लेद

प्राणों की प्यारी कहाँ तिहारे डेरा ऐ हाँ कहा तिहारे डेरा...2
अट्टा ऊपर शेज बिछी है - हाँ-हाँ-हाँ अब हो-हो-हो
वहीं हमारे डेरा-डेरा-डेरा
प्राणों की प्यारी कहाँ तिहारे डेरा - 2

गोत्र वरू की प्रशस्ति

- प्रस्तुति निशीथ चतुर्वेदी, डबरा

माथुर चतुर्वेदी ब्राह्मणों की विरुदावली यह विरुदावली शञांखोच्चार के उपरान्त वरुओं द्वारा कीर्ति गायन के रूप में पढ़ी जाती है।

दन्त वदन सुख सदन मदन वाहन प्रिय नन्दन ।
गवरि नन्द आनन्द कन्द सन्तत जग वन्दन ॥
परसु धरन दुख हरन नरन को सब सुख दायक ।

लम्बोदर उन्दर अरूढ़ सुन्देर सब लायक ॥
सिन्दूर भाल अरु ससिकला जनकिशोर वन्दत चरन ।
बुधि देहु एहु सित सुत बरनों वर माथुर वरन ॥
धरि वराह अवतार मारि हिरनाक्ष आनि धर ।
करि विश्राम विश्रान्त सप्त थापे जहँ मुनिवर ॥

भारद्वाज भारगव धौम्य वशिष्ठ बखानिय।
श्रौश्रवस अरु दक्ष कुत्स्य कौरति जग जानिय ॥
ऋगवेद साख कर कौस्तुभी आश्वलायन साख श्रुव।
मथुरानिवास माथुर विदित जवसि जज्ञ वाराह हुब ॥

आंगरिस बार्हस्पत्य भारद्वाज सित होय।
तीन प्रबर भारद्वाज के सामवेद पढ़ सोय ॥
पाँडे अरु पाठक रावत नसबारे कारे ।
नाग पिलहौली बीसा चौपीली बखानिये ॥

मामले अश्जुमियां कोहरे तिवारी ।
दिया चाट सड्ड भेंसरे गुनार चहुंचक मानिये ॥
सिकरौरासरस विविध वेद कण्ठ पाठ
माथुर मयंक सो किशोर जग जानिये ।

भारद्वाज गोत्र राते सामवेद पढ़ें ।
तेते मथुरा नगर ऐते बैंक पहचानिये ॥
इक भार्गव च्यवन ऋषि आप्नुवान ।
औंर्व मुनि जामदग्न्य युत पंच प्रवर ये जान ॥

दीखत दीखित गहरवार दरर गुगोलियाडरु ।
गोंहजे कनेरे दोऊ एक जात कीजिये ॥
तरेरे धेहरिया सकना चतुरमई ।
आमरे मकनियाँ सोजु समाग मेर दीजिये ॥

कहत किशोर ऐते भारगव गोत्र मांही
महिमा समुद्र बैक बेदन के रीझिये ।
दान सन्मान सुख पूरन सकल ज्ञानी
गर्ग मुनि के समान महि मण्डल में जीजिये ॥

वशिष्ठ शक्ति पाराशर ये तीनों कर न्यास ।
ये वशिष्ठ के प्रबर हैं विबिधरूप धर व्यास ॥
निनावली काहौ जौनमाने और बटिठया है।
डाहरू परम शुचितन जग पायी है॥

डुंडवार पेठवार माथुर डटौलिया हैं। ।
जिनकी सुयश तीन लौकन में गायौ है ॥
मथुरा में बसे केशोंराय के निकट नित्य,
करन बिहार नन्द नन्दन बनायों है॥

ऐते बंक महि पै महीन से बिराजत है।
कहत किशोर गोत्र वसिष्ठ सुहायौ है ॥
सौश्रवस के प्रवर हैं, विस्वामित्र सुजान ।
देवरात और औदले तीनों ब्रह्म समान ॥

पुरोहित छिरोंरा धौरमई मिश्र माने जात ।
चकेरी बुदौआ तोपजाने रस रीति है॥
चन्द से उजारे चन्दपुरिया वेसान्दर ।
सुमावली अनूप अति वेदन सों प्रीति है॥

माथुर उजागर जप यज्ञ करन हारे ।
जग में निहारे सब साधुता पुनीत है ॥
पूजत जगत पद पंकज प्रणाम कर ।
सब सुखधाम नन्द-नन्दन के मीत है ॥

कश्यप अवतार युत, ये ध्रुव प्रवरहि रीति।
मुनि सवश्र मर्य्याद में, धौम्य गोत्र सों प्रीति ॥
लापसे भरतवार तिलमने तिहुलोक ।
मौरे घरवाली सो उजारे, चन्द पेखिये ॥

जीजले, शुक्ल ब्रह्मपुरिया, सोती सुझाव ।

चाय चौपरे लाख लाखन में देखिये ॥
कहत किशोर एते धर्मरत माथुर हैं।
जझिन जगत मांहि दमक विशेखिये ॥

धरणी से कहत बराह सुन वसुमति ।
मेरे रूप माथुर सो मोहि सम देखिये ॥
आत्रेय गाविष्टर विमल, पौर्वतिथि शुभजान ।
ऐसे प्रवर विचार के दक्ष गोत्र परमान ॥

जगत प्रसिद्ध हैं ककोर दक्ष फेचरे
औ पुरबेऊ सज्जन जुनालिये बखानिये ।
बाराहपुराण वर विद्या सु अपार रहे
हर शीर्ष श्वेत बिन्दु उपजे सुगानिये ॥

कहत किशोर गुन जपत है रैन दिन
सुरन सहित दक्ष गोत्र के प्रमानिये ॥
सुमति पुरानन को ऋगवेद मानन को
जज्ञ विधि जानन को प्रगट सुजानिये ॥

आऑगरिस यौवनाश्व पुनि कौत्स सहित सौ गाइ ।
कृत्स गोत्र के प्रवर ये ध्रुव सो अटल सुभाइ॥
शाडिल्य मिहारी खिल हरे और मरौठिया है
सुन्दर सलौने सब ही के सरदार हैं।

सुवरन सरस वरण अशरण जग
शरण सुहात ऋषि विद्या के अगार है॥
कहत किशोर क्रुस्य गोत्र के बखानत हैं।
केहि विधि गाऊ इन कीरत अपार है॥

कुल उजियारे वेद धर्म के रखन बारे
प्यारे हरि ही के ये माथुर अवतार हैं॥
सम्व्रत अठारह शतक अरु इक सत्तर जान ।
चेत्र सुदी की प्रतिपदा सुर गुरुवार बखान ॥

चौवे गोकुल चन्द जी कुल गुरु वामन भूप
गाथा चौसठ अल्ल की रचिके कही अनूप ॥
कवि किशोर मम नाम है वरू जो माथुर देव ।
बसत मधुपुरी मंझ में रचि कविता कर सेब ॥

आमंत्रण

बंधुवर पालागन,
होली के त्यौहार का यही मूल संदेश,
समता–ममता, स्नेह का निमित्त हो परिवेश।।

इन्हीं भावनाओं से ओतप्रोत हो होली मिलन समिति होलीपुरा द्वारा विगत दो दशकों से अनवरत ग्राम होलीपुरा में होली के अवसर पर प्रतिवर्ष मिलन समारोह का आयोजन संचालित किया जा रहा है। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी होली मिलन समिति ने आपके आवास व भोजन की व्यवस्था 28 मार्च से 31मार्च 2021 तक की है। जिससे गाँव में हम पुनः कह उठे कि

महकी महकी हर गली, बहका बहका ढंग।
तरंग यह भंग की, या मौसमी उमंग।।

अतः आपसे निवेदन है कि सुव्यवस्थित व्यवस्था हेतु अपने आगमन की पूर्व सूचना फोन, व्हाट्सएप व पत्र द्वारा देने की कृपा करें।

नोटः जिन बान्धवो को बिस्तर की आवश्यकता हो वे कृपया पूर्व सूचना करने की कृपा करे ताकि व्यवस्था सुनिश्चित की जा सके।

धीरेंद्र चतुर्वेदी (9005571744), डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी (9873395001), करुणेश चतुर्वेदी (7974271812), नवीन चंद्र चतुर्वेदी (9557711836)

विनम्र श्रद्धांजलियां

- अवन्तिका चतुर्वेदी, ग्वालियर/नासिक

ऐसे तो मेरा ग्वालियर आना जाना सतत् लगा रहता है। एक तो इस बार कोविड महामारी के कारण एक वर्ष से अधिक के बाद ग्वालियर जाने का अवसर मिलने पर जाने की उत्सुकता थी ही परन्तु मन भी यह सोचकर भारी हो रहा था कि मेरे प्रिय चाचा रजत एवं मेरी स्नेहिल मामी दादी (श्रीमती प्रमिला उर्फ मुनिया) के दर्शन नही हो सकेगें। इन दोनों शख्सियतों के असमय व अचानक बिछोह से मेरी हंसमुख दादी की हुई मनोदशा व व्यथा की कल्पना भी मुझे विचलित कर रही थी।

मैं जनवरी के प्रथम सप्ताह में ग्वालियर पहुंची और जैसा कि मुझे आभास था कि दादी व परिवार के सभी सदस्यों के चेहरे पर सदैव रहने वाली वह खुशी व उत्साह मैं नही देख पा रही थी। यद्यपि मेरे व मेरी पुत्री के पहुँचने से उनके चेहरे पर खुशी व प्रसन्नता तो आई पर मन के अन्दर के कष्ट का प्रभाव भी दिख रहा था। ईश्वर को हमारे परिवार की इस असीम वेदना से भी संतोष नही हुआ और उसने हमारे हर दिल अज़ीज फूफाजी (श्री नवीन उर्फ दुल्लू) को भी हमसे छीन लिया। माना कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है परन्तु मानवीय शक्ति क्या इतनी असहाय है कि ईश्वर द्वारा लिए जा रहे कठोर निर्णयों को अस्वीकार कर सकें। मुझे तो ये ईश्वरीय निर्णय स्वीकार नहीं है एवं ईश्वर ने जिन-जिन को मुझसे असमय छीना है उन सभी को मैं अपने मन व मस्तिष्क में सदैव जीवन्त रखकर इन ईश्वरीय निर्णयों केा अमान्य ही करती रहूंगी। अपनी इस धृष्टता के लिए ईश्वर से क्षमा मांगती हूँ।

रजत चाचाजी से मैं बचपन से ही प्रभावित रही। मुझे स्मरण है कि वर्ष 2000 में जब वे मिस्टर मध्यप्रदेश की प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए भोपाल आए थे (उस समय मेरे पापा की पोस्टिंग राजभवन में थी) और प्रतियोगिता के फायनल राउण्ड में जब उन्होने जिस आत्मविश्वास भरी वाणी व शुद्ध हिन्दी के श्रेष्ठ शब्दों से गुंजित वाक्यों से स्वपरिचय दिया था। तभी उपस्थित जनसमूह की समर्थन पूर्ण आवाज ने उन्हें चैम्पियन बना दिया था। परंतु अभी परिणाम आना शेष था। मैं, मम्मी, पापा सभी जितने आकुल हो रहे थे। अंतिम परिणाम को जानने को, उतना ही उद्घोषक भूमिका बना रहे थे। अन्ततः परिणाम घोषित हुआ और जनसमूह की गगनभेदी समवेत आवाज तथा करतलध्वनि के बीच मेरे रजत चाचा के मिस्टर मध्यप्रदेश बनने का ऐलान हुआ। संयोग से उन्हीं दिनों तत्कालीन राज्यपाल महोदय ने राजभवन के अधिकारी परिवारों के साथ कार्यक्रम रखा था। अतः हमारे साथ रजत चाचा भी सम्मिलित हुए। पापा ने राज्यपाल महोदय से उनका परिचय कराया तथा राज्यपाल एवं उपस्थित सभी ने उन्हें बधाईयां दी। रजत चाचा स्वास्थ्य के प्रति तो सजग थे ही इसके साथ-साथ परिधानों का चयन भी शानदार रहता था। ग्वालियर प्रवास में जब राजेश चाचा के घर पर व्यवस्थित रखी उनकी फोटो पर माला चढ़ी देखी। तब मुझे खुद पर नियंत्रण रखना मुश्किल हो गया।

प्रमिला मामी दादी को मैंने हमेशा अलमस्त व निष्फिकर ही देखा। जब भी उनसे मिलना हुआ। उन्होंने हमेशा मुझे गले लगाकर भरपूर स्नेह व प्यार दिया। उनसे बातचीत करना बहुत अच्छा लगता था। पर कभी ऐसा नही लगा कि हम अपने से दो पीढी पहले की शख्सियत से मिल रहे हैं व बात कर रहे हैं। इसी प्रवासकाल में जब उनके घर गई और उनकी फोटो पर भी माला देखी तो मन बहुत दुखी हुआ। मामी दादी आप आगे सशरीर बेशक न मिलें, पर आपके स्नेह व आशीर्वाद की अनुभूति मुझे पूरे जीवन रहेगी।

मेरा ग्वालियर प्रवासकाल समाप्त हुआ नहीं था कि एक और वज्रपात हुआ। हर दिल अज़ीज नवीन फूफाजी के देहांत के समाचार से। वे बीमार थे उनकी श्रेष्ठ चिकित्सा भी चल रही थी। हम सभी उनके शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना भी कर रहे थे। इसलिए विश्वास था कि वे शीघ्र ही स्वस्थ होकर घर लौटेंगें। मुझे याद है कि मेरी मम्मी के पी.जी.आई. चण्डीगढ़ में उपचार के समय (उन दिनों वे पंचकुला में रहते थे) उन्होने बहुत दौड़-भाग की। मेरे पापा के मनोबल को हमेशा बनाए रखा था। दुर्भाग्य से हम मम्मी को वहां से जीवित वापिस नही ला सके परन्तु उस समय पंचकुला व मोहाली में निवासरत मेरी दोनो बुआओं व फूफाजीओं से मिला सहयोग व संबल हमारे लिए अविस्मरणीय रहेगा। नवीन फूफाजी की बातों में खूब हास्य रहता था, स्वादपूर्ण खाने-पीने के शौकीन तो थे ही, आतिथ्य भाव भी कूट-कूट कर भरा था। अपने सुपुत्र एकांश का गरिमामयी सगाई कार्यक्रम दो माह पहिले ही संपन्न किया था और 27 अप्रैल को होने वाले विवाह की व्यवस्था मे जुट गए थे।उनकी प्राथमिकता अतिथियों को अधिक से अधिक सुविधा उपलब्ध कराने की थी। ईश्वरीय निष्ठुर निर्णय से वे इन कार्यक्रमों में बेशक सशरीर उपस्थित नहीं रहेंगें परंतु उनके आशिर्वाद से उनकी इच्छा अनुरूप ही सभी वैवाहिक कार्यक्रम निश्चित ही गरिमामयी व वैभवमयी रूप से होंगें। मै पुनः इन सभी आदरणीय शख्सियतों के प्रति पूरे सम्मान व श्रद्धा से भावभीनी आदरांजलि अर्पित करती हूँ। विश्वास है कि हम सभी पारस्परिक सहयोग, समन्वय व समझ से इन ईश्वरीय निष्ठुर निर्णयों का सामना करने के लिए सक्षम रहेंगें।

ॐ शांतिःशांतिःशांतिः!!!

श्रद्धावनत

भावपूर्ण श्रद्धांजली
50वीं पुण्यतिथि

स्व. काशीनाथ चतुर्वेदी (जोनमाने) खजान्ची, मथुरा

(देहावसान 13 फरवरी 1971, तिथि : फागुन कृष्णपक्ष तृतिया संवत 2027)

श्रद्धावनत

समस्त खजान्ची परिवार, मथुरा।

आवास: 5/207, महादेव गली,नगला पायसा, मथुरा

शाखा समाचार

भोपाल

श्री माथुर चतुर्वेदी सभा, शाखा भोपाल द्वारा दिनाँक 26.01.2021 को चतुर्वेदी समाज भोपाल का पिकनिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। पिकनिक स्थल का चयन ग्रामीण परिवेश को देखते हुए किया गया। चाय की चुस्कियों के साथ चर्चाएं चलती रही। जैसा कि निश्चित किया गया था कि श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की कार्यकारिणी में भोपाल समाज से लिए गए सम्माननीय पदाधिकारियों का सम्मान व स्वागत किया जाए। अध्यक्ष श्री सुरेंद्र चतुर्वेदी द्वारा सम्मानित बंधुओं का

परिचय कराया गया। उनके द्वारा बताया गया कि सर्वश्री भरत जी भूतपूर्व सभापति एवं संरक्षक, श्रीमती उषा भरत जी उपसभापति महासभा, शशांक जी (संपादक, चतुर्वेदी चंद्रिका), अजय जी आमंत्रित सदस्य, श्री अंबर पांडे जी आमंत्रित सदस्य स्वागत करना हमारे लिए गर्व का विषय है। फूल माला, शाल, श्रीफल एवं प्रतीक चिह्न से हरीश जी, नीरज जी, मुकेश जी, श्रीमती रश्मि जी, श्रीमती सारिका जी, श्रीमती निशा जी, श्रीमती वंदना जी, प्रेम जी, ललित जी (इटावा), अशोक जी एवं श्रीमती करुणा जी द्वारा महासभा कार्यकारिणी के पदाधिकारियों का स्वागत व सम्मान किया गया। विशेष उल्लेख करते हुए शाखा अध्यक्ष श्री सुरेंद्र जी ने बताया की श्री शशांक जी ने उल्लेखनीय कार्य किए हैं। चतुर्वेदी चंद्रिका के प्रकाशन व्यवस्था, वितरण व्यवस्था, भोपाल चतुर्वेदी डायरेक्टरी का प्रकाशन, निरंतर 11 वर्ष महासभा संयुक्त सचिव, लगभग 5 वर्ष भोपाल सभा का दायित्व और अब चतुर्वेदी चंद्रिका के संपादक का दायित्व। लगातार विभिन्न पदों पर रहने के बाद भी कार्यकर्ता के रूप में कार्य करना श्री शशांक जी की विशेषता है। तरुण जी निवर्तमान अध्यक्ष शाखा भोपाल को भी सम्मानित किया गया। चिंतामणि जी (चंद्रपुर), दिवाकर जी की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय रही। सुस्वादु सहभोज के उपरांत कार्यक्रम का समापन किया गया। आभार प्रदर्शन शाखा सभा के सचिव बीनू जी द्वारा किया गया।

– सुरेन्द्र चतुर्वेदी, अध्यक्ष

कोटा

श्री माथुर चतुर्वेदी सभा कोटा की दिनांक 01.08.2020 को हुई शाखा सभा कार्यकारिणी की बैठक आयोजित की गई। जिसमें राजस्थान की फोन निर्देशिका "संवाद प्रवाह-2" का विमोचन किया गया। उसी बैठक में चुनाव अधिकारी श्री अनिलकुमार चतुर्वेदी दादाबाड़ी की नियुक्ति की गई और उनसे चुनाव करवाने का अनुरोध किया गया। दिनांक 26.01.2021 को चुनाव अधिकारी ने चुनाव की प्रक्रिया पूर्ण कर सभी उम्मीदवारों को निर्विरोध निर्वाचित घोषित कर दिया। निर्विरोध निर्वाचित पदाधिकारी इस प्रकार रहेः-

अध्यक्ष– विनय जी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष- अतुल जी, महासचिव– श्री आलोक जी, कोषाध्यक्ष- शिव जी, संयुक्त सचिव- विजय जी, संगठन सचिव- अर्चना जी, प्रचार सचिव- शरद जी, खेल एवं सांस्कृतिक सचिव- संदीप जी, प्रभारी महिला प्रकोष्ठ- आशा जी, प्रभारी युवा प्रकोष्ठ- तरुण जी। सभी ने नवीन कार्यकारिणी को बधाई व शुभकामनाएं दी। ललित जी ने सभा भवन की इस विकास यात्रा में समाज के महानुभावों के सहयोग के लिए हृदय से कृतज्ञता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि कोटा की कई विभूतियों ने समाज सेवा के क्षेत्र में परचम फहराया है लेकिन श्री शिव चतुर्वेदी एक मात्र व्यक्ति हैं जिन्होंने तन-मन-धन से समर्पण के साथ अपनी सेवाएं चतुर्वेदी समाज को प्रदान की। वे सदैव समाज सेवा के लिये तत्पर रहते हैं। सभी ने करतल ध्वनि से समर्थन किया। उन्होंने नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री विनय चतुर्वेदी की सेवाओं को भी सराहा। समाज सेवा के क्षेत्र में ब्लड डोनेशन केम्प, योग दिवस पर योग शिविर आदि के आयोजन। अभी अप्रेल 2020 में चतुर्वेदी समाज के राजस्थान के 42 नगर कस्बों व गावों के बांधवों के नाम, पते, गौत्र-अल्ल-मूलनिवास सहित मोबाईल नम्बर युक्त एक निर्देशिका भी "संवाद प्रवाह-2" के नाम से प्रकाशित की गई है आशा है यह सभी के लिये काफी उपयोगी सिद्ध होगी। विनय जी अपनी कार्यकारिणी के सहयोगियों को निर्वाचन पर बधाई दी। अन्त में इस कार्यकाल के दौरान साथ छोड़ गये कार्यकारिणी के संरक्षक/पदाधिकारी सर्वश्री ललितकिशोरजी, रमाकांतजी, ज्ञानप्रकाशजी, दिलीपकुमारजी, चन्द्रप्रकाशजी, राकेशजी रावत को सादर श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

– **आलोक चतुर्वेदी,** महासचिव

लखनऊ

रविवार २४ जनवरी 21 को खेल कूद के साथ ही लगभग 10 माह बाद मंडल की आमसभा की बैठक संपन्न हुई। सर्वप्रथम नगेन्द्र जी के मंगलाचरण से कार्यवाही शुरू हुई। फिर कोषाध्यक्ष पूनम जी ने कार्यकारिणी द्वारा अनुमोदित बैलेंस शीट

प्रस्तुत की। ललित जी ने मेडिकल फण्ड पर सवाल उठाए। अध्यक्ष पुत्तन जी ने सदन को विश्वास दिलाया कि वर्ष 2020–21 की बैलेंस शीट में टोटल कलेक्शन से दोनों सालों का 2019––21 का 10% मेडिकल फण्ड में दिखा देंगे। विपिन जी ने रविंद्रालय के एडवांस एवं किराया एक साथ दिखाने पर सवाल उठाए। पूनम जी ने कहा कि इस गलती को भी ठीक कर देंगे। प्रफुल्ल जी ने फिरोजाबाद क्रिकेट प्रतियोगिता के लिए 3200/– दिखाने पर आपत्ति की। इस पर सदन में गर्मागर्म बहस हुई। जिसमें ललित जी, विपिन जी, मृगेंद्र जी, पंकज जी, प्रमोद जी, आनंद जी, रमेश जी, विनय जी, वीरेंद्र जी, संजय जी, मंजुल जी, तरुण जी ने अपने अपने विचार रखे। मंत्री ने अपनी स्पष्टीकरण दिया। अंत में पुत्तन जी के अनुरोध पर सदन ने इस खर्च को अनुमोदित कर दिया। सदन ने तालियों के साथ पूनम जी को बधाईयां देकर बैलेंस शीट पास कर दी। चर्चा में सुबोध जी, रमेश जी, मनीष जी, रमाकांत जी, भारत भूषण जी, शैल जी, आनंद जी,पूनम जी,रश्मि जी, मधु जी व अन्य लोगों ने सक्रिय भाग लिया। शैल जी ने के.सी भाईसाहब के घर पर दशकों से रखें बर्तन्नो की समस्या को फिर उठाया। अध्यक्ष पुत्तन जी ने बताया कि शैल जी पहले भी आपके कहने पर ही कमेटी बना कर (जिसमें आप,प्रदीप जी,पुत्तन जी) समस्या को हल करने का प्रयत्न किए गए, लेकिन सहयोग नहीं मिला। इसलिए समस्या हल नहीं हो सकी। फिर दिलीप सिकंदरपुरिया, प्रफुल्ल जी के प्रस्ताव पर सदन ने सर्वसम्मति से बर्तनों को बिक्रय कर निस्तारण करने को मंजूरी दे दी। इसके बाद अध्यक्ष पुत्तन जी ने बताया कि आगामी 14 फरवरी को दिलकुशा पार्क में पिकनिक आयोजित की गई है। सदन में दिल्ली से आकर लखनऊ में बसने के लिए सदन ने आर पी एफ से रिटायर दीपक (जम्मू) जी एवं उनकी पत्नी रेखा जी का तालियों के साथ स्वागत किया। महासभा के उपाध्यक्ष अखिलेश जी ने सदन को महासभा की गुल्लक – कैलेण्डर योजना की जानकारी दी। इससे पहले 15–15 ओवर के मैच में संस्कार एकादश ने प्रशांत एकादश को पराजित किया। सदन ने संजय जी के लखनऊ में चतुर्वेदी क्रिकेट एकादश के विकास के लिए दिनों–दिन किये जा रहे प्रयासों की सराहना की। खेल कूद में बच्चों के साथ ही महिलाओं, पुरुषों ने भी बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया। सबसे महत्वपूर्ण बात 84 वर्षीय कृष्णमोहन जी का दोड़ में भाग लेना रहा।अंत में सदन ने मंडल पदाधिकारियों के साथ ही सभी आगंतुकों ने आयोजन के प्रयासों की सराहना करते हुए विदा ली।

– शिशिर चतुर्वेदी, मंत्री

समाज समाचार

महासभा शताब्दी वर्ष के अवसर पर महासभा के संस्थापक सदस्य स्वर्गीय अयोध्या प्रसाद पाठक जी,एडवोकेट, आगरा की स्मृति में उनके पौत्र श्री मधुकर पाठक, आगरा ने 5000/– रुपये महासभा सहायतार्थ प्रदान किए। आभार। (र.क्र.472)

–0–

संशोधन : 1) विवाह विच्छेद निराकरण समिति में श्री ज्ञानेंद्र चतुर्वेदी (नागपुर) का भी नाम पढ़ा जावे।

2) श्री ज्ञानेंद्र जी (नागपुर) ने महासभा सहायतार्थ 24000 रुपये प्रदान किये।

–0–

राष्ट्रीय शिक्षक सम्मान प्राप्त विद्यार्थी परिषद की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के विशेष आमंत्रित सदस्य व श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के कार्यकारिणी सदस्य डॉ. राकेश चतुर्वेदी (मथुरा) ने अयोध्या में निर्माणाधीन भव्य श्री राम मंदिर निर्माण हेतु 1,21,000/– की सहयोग राशि प्रदान की।

–0–

डॉ. अशोक जी (तरसोखर/ग्वालियर) ने श्री राम मंदिर,अयोध्या हेतु समर्पण राशि 1 लाख रुपये प्रदान की।

–0–

कु. आकांक्षा (चिन्की) पौत्री श्री गजेन्द्र– शोभा चतुर्वेदी, पुत्री श्री लोकेन्द्र–दीसी चतुर्वेदी (होलीपुरा चचा कम्पनी /रांची) कल दिनांक 24 जनवरी 2021 को झारखण्ड आर्म्ड पुलिस (JAP) के रांची स्थित प्राँगण में आयोजित अखिल भारतीय योगा चैंपियनशिप में झारखण्ड राज्य का प्रतिनिधित्व किया।

–0–

श्री प्रभात कुमार चतुर्वेदी (मैनपुरी/कोटा/बैंगलोर) अपनी धर्मपत्नी श्रीमती रेखा चतुर्वेदी की स्मृति में (चौबरसी) के अवसर पर अन्नपूर्णा सहायतार्थ 12000/– प्रदान किये। (र.क्र.395)

–0–

श्री प्रदीप चन्द्र चतुर्वेदी को रेलवे मंत्रालय की शीर्ष संस्था ज़ोनल यूजर्स रेलवे कमिटी (उत्तर मध्य रेलवे) का सदस्य नामित किया गया।

चि. कविश पुत्र श्री शशिकांत चतुर्वेदी – श्रीमती अनामिका चतुर्वेदी सुपौत्र स्व. पूरनमल चतुर्वेदी – श्रीमती रुकमणि चतुर्वेदी (आगरा) का शुभविवाह सौ. का. ऋतिका सुपुत्री श्री धीरेन्द्र नाथ चतुर्वेदी – श्रीमती रचना चतुर्वेदी सुपौत्री स्व.त्रिपुरारी लाल जी – स्व. श्रीमती उर्मिला चतुर्वेदी (पिनाहट / इंदौर) के साथ दिनांक 27/11/2020 को आगरा में संपन्न हुआ। इस अवसर पर आपने महासभा सहायतार्थ 1100/– रुपये प्रदान किये। बधाई। (र.क्र. – 514)

–0–

चि. अनुभव सुपुत्र श्रीमती शैलबाला – श्री डालेंद्रनाथ चतुर्वेदी (चंद्रपुर/लखनऊ) का शुभ विवाह सौ. अंकिता सुपुत्री श्रीमती हेमा – स्व. श्री मिथिलेश कुमार चतुर्वेदी (मैनपुरी/रिसड़ा) के साथ दिनाँक 05.12.20 को लखनऊ में संपन्न हुआ। इस अवसर पर आपने पत्रिका सहायतार्थ 500 रुपये प्रदान किए। बधाई। (र.क्र.518)

–0–

कुलदेवी महाविद्या जी की असीम कृपा से सुपौत्र स्व. श्री जानकी प्रसाद जी एवं स्व. श्रीमती रानी एवं सुपुत्र श्री आनंद कुमार जी एवं श्रीमती पदमा चतुर्वेदी के पुत्र – पुत्रवधू श्री चंद्रकांत चतुर्वेदी एवं श्रीमती उर्वशी चतुर्वेदी (कमतरी/इलाहाबाद/विदिशा) के विवाह की रजत वर्षगांठ 30 जनवरी 2021 के शुभ अवसर पर कुलदेवी महाविद्या जी मंदिर सहायतार्थ 2501/– रुपए प्रदान किये। बधाई। (र.क्र.517)

शोक समाचार

* श्रीमती कृष्णा चौबे पत्नी श्री गजेंद्र चौबे होलीपुरा दमोह का स्वर्गवास दिनांक 21 जनवरी 2021 को 68 वर्ष की आयु में इंदौर में हो गया।

* श्री प्रदीप चन्द्र पाठक पुत्र स्व० श्री प्रमोद चन्द्र पाठक (आगरा/ मुम्बई/ बैंगलुरू) का स्वर्गवास दिनाँक 28.01.21 की रात्रि को बैंगलुरू में हो गया।

* श्रीमती प्रेमा चतुर्वेदी पत्नी स्व.श्री धर्मनाथ जी चतुर्वेदी (बसवा–गोविंदपुरा/जयपुर) का स्वर्गवास 29.01.21 को हो गया।

* श्री सुरेन्द्र सिंह चतुर्वेदी पुत्र स्वर्गीय श्री प्रताप सिंह जी (इटावा/उज्जैन) का स्वर्गवास दिनांक 10.02.2021 को उज्जैन में हो गया।

* श्रीमती इन्दिरा चतुर्वेदी पत्नी स्व. प्रेम कांत चतुर्वेदी (होलीपुरा/सिकंदरपुर/ कानपुर) का स्वर्गवास 93 वर्ष की आयु में दिनाँक 11 फरवरी 2021 को विकास जी चुन्ना भैय्या के पास कानपुर में हो गया।

* श्रीमती मीना पत्नी श्री मोहन जी (पटना/तालगांव) का स्वर्गवास 12 फरवरी 2021 को पटना में हो गया।

* श्रीमती मनोरमा पत्नी स्व. रविन्द्र नाथ जी (होलीपुरा/लखनऊ) का स्वर्गवास दिनाँक 18 फरवरी 2021 को लखनऊ में हो गया।

* डा.शशि कांत चतुर्वेदी जी, अध्यक्ष, इंदौर सभा सुपुत्र स्व. श्री शम्भूनाथ चतुर्वेदी,पूर्व सभापति, महासभा (चंद्रपुर/इंदौर) के स्वर्गवास दिनाँक 21 फरवरी 2021 को प्रातः इंदौर में हो गया।

* श्रीमती आभा चतुर्वेदी पत्नी श्री रामेश्वर दयाल (जहांगीरपुर/आगरा/कोलकाता) का स्वर्गवास दिनाँक 20 फरवरी 2021 को कोलकाता में हो गया।

* श्री समीर चतुर्वेदी सुपुत्र स्वर्गीय ओमकार नाथ मिश्र (मुरादाबाद/मैनपुरी/कानपुर) के आसामयिक स्वर्गवास 48 वर्ष की अल्प आयु में दिल्ली में हो गया। आप महासभा कार्यकारिणी सदस्य संजय मिश्रा (कानपुर) के छोटे भाई थे।

* श्री अरुण चतुर्वेदी (कछपुरा/आगरा/ गुरुग्राम) का स्वर्गवास दिनाँक 21.02.2021 को गुरुग्राम में हो गया।

* श्रीमती साधना चतुर्वेदी पत्नी श्री मनोज चतुर्वेदी, रि. पुलिस उपाधीक्षक (मथुरा/ आगरा) का स्वर्गवास दिनाँक 23 फरवरी 2021 को आगरा में हो गया।